विषयसूची

विषय	खण्ड	अध्याय	इलोक	पृष्ट संख्या
ग्रन्थायतार	9	3	4004	5-0 44441
सकल-निकल-प्रशिधान	9	9	9	9
लीलायतारसप-प्रणियान	9	9	2	
सत्रविकार (टी.)	3	9	3	7
चासुषी दीक्षा (टी.)	9	,	4	8
अव्यवज्ञ पुराण	9	9	w-99	8.
जाटावचा उपपुराण	9	7	12-16	4
स्कन्द पुरम्य निस्त्रण	9	9	96-58	·q
सूतसंहिता निरूपण	9	9.	24-22	S _q
सर्वाध्याय-विषय (दी.)	9	9	38	29
पुराष-लक्ष्म	d	9	व्य	e.
येव अधिरुद्ध	9	9	30	٤
स्पृति कर्मप्रयान, पुराष ज्ञानप्रधान (टी.)	9	9	89	7
व्यासकृत सम्प्रदायप्रवर्तन (हि.)	9	9	8.4	90
व्यास सर्वत	9	9	Aus	90
सूतकृत स्तुति	9	9	48-44	99
पाशुपत बत	9	₽		94
जबत् जन्य अतः सकारणक	7	4	9	93
पश्च व प्रकृति की अकारणता	9	3	¥	9.9
तस्वशब्दार्थ (टी.)	9	2	Ø	今日-
एक वित्व ही कारण है	-9	3	4	93
2000	9	6.	*	9.8
देवकृत अत	9	2	93-79	94
सोम-सम्रिधि	9	4	35-33	9 &
सोम-उपवेश	9	₹	32-56	96
ई ड्य-प्रतिपादन	9	a		9.0

सर्वपूज्य विषयक प्रश्न	9	9	9	₹0
बिष्णु का मोह	9	3	8-10	30
मन्दिकेश्वर का उपदेश : शंकर परमेश्वर	9	W	97-79	29
देचकृत वृषवाहन-स्तुति	9	3	510-25	3.3
अहेबमात्र-गुणस्वीकरण अयुक्त (हि.)	9	3	23	58
ईस्पर-पूजा-विधान	7	ď		28
लिंगलक्षप (टी.)	9	*	8	30
आयाहन-विसर्जन	9	8	4	38
आश्रमभेद से मंत्रव्यवस्था	9	A	93	26
स्त्रियों के लिए पंचाक्षरमंत्र	9	8	98	38
मंदिर को अणाम करना पूजा है	9	R	9 4	56
ञ्चद्रादि को भी पंचासर में अधिकार (टी.)	9	R	96	२९
तीर्थसेवा से गोक्ष	,9	8	89-84	29
ञक्तिपूजाविधि	9	tų		33
पराञक्ति (टी.)	9	4	8	₹ E
वैदिक-तान्त्रिक विभाग	9	ч	8-4	3 3
वाद्यपूजा	9	Q	ξ-0	38
मातृका-विचार	9	te _t	9	38
आभ्यन्तर-पूजा	9	4	99	34
संविद्वाचक इब्दिवय	9	4	90	३६
ञियभक्तपूजा यिषि	3	Ę		36
अष्टविधभक्ति (दी.)	9	Ġ.	9	36.
शक्त कौन (हैं.)	9	Ę	9	38
बाराणसी आदि तीर्थसेयन	9	Ę	90-46	38
मुक्तिसाधन-प्रकार	9	V		XX
ज्ञान ही मोक्षसाधन	9	Ø	9 %	86
ज्ञानाधिकारी	9	19	9.9	४६
द्विज स्त्रियों को श्रीत ज्ञान में अधिकार	9	15	9.0	RE

				[3]	
ञूब का पुराण में अधिकार	9	\$3	29	8.8	
भाषान्तर ब्रन्य भी उपकारक	9	13	22	80	
'वियां चावियां है' मंत्र का अभिप्राय ((বি.) ৭	69	3.8	As	
तीर्यसेवा का साफत्य	3	19	34-80	88	
कालपरिमाण और काल से अनवस्थित	स्यरूप १	2		47	
काष्ट्रा, निमेच आदि अवयव	9	6	2	42	
देवताओं के अहोरात्र	9	6	Ę	42	
चार युग	9		4-99	48	
मन्दन्तर	9	6	9.8	48	
कल्प	9	4	9 3	५४	
बिपरार्थ	9	6	98	48	
विलय	9	6	9 4	44	
माया आदि नाम-सार्थक्य	9	3	96-21	લ્લ	
प्रथकाल	9	4	27	ધ દ	
श्चिय काल से अनयस्थित	9	6	38	ધ્દ	
क्रिव सर्वकारण	9	4	२६	40	
गुणमूर्तिवर्णन	9	4	40-33	40	
हद्रमूर्ति का वैशिष्ट्य	9	4	ж0	५ ९	
महादेव ही प्रतिपाद	9	4	¥¢	&O	
पृथिवी का उद्घार	9	9		8 9	
नारायणनाम का निर्वचन	9	9	<i>19</i>	ĘĘ	
ब्रह्मर्थियों द्वारा विष्णुस्तोत्र	9	9	92-38	E 3	
ग्रहासुच्टि	9	10		ĘĘ	
सर्गक्रम (टी.)	9	10	2	EE	
तम, बोह आदि का स्वरूप (हिं.)	9	90	*	80	
वृक्षादिसर्ग	9	90	4	EG	
देवसर्ग	9	90	9		
मानुषसर्ग	9	10		E 10	
	7	10	9.9	६८	

	1				
	भूतादिसर्ग	9	90	93	E 6
	महान्, तन्मात्रा आदि की सृष्टि	9	90	98	23
	कीमार सर्ग	9	90	96	88
	अर्थनारीझ्यर का प्रादुर्भाव	9	90	39	(O ()
	हर का अशुभ सृष्टि न उत्पन्न करना	9	90	₹ €	90
	पंचीकरण	9	90	₹ 9	09
	मरीथि आदि साधकों की उत्पत्ति	9	90	8.5	199
	असुरसृष्टि	9	90	8.2	199
	राब्रि आदि की सृष्टि	9	90	810	65
	मृष्टि स्वन्तसम है	9	90	42	65
	हिरण्यगर्भादि विशेषसृष्टि	9	99		10.3
	क्लेशमूलक सृष्टि (टी.)	9	99	3	08
	ज्ञानशक्ति आदि का जन्म	9	99	8	108
	अंतर्यामी	9	99	90	100
	स्वराट्, तम्राद्, विराद्, स्वराट्	9	99	99-97	04
	मनु- शतस्त्रा	9	99	94	७६
	दस की चीवीस पुत्रियाँ (टी.)	9	99	99	७६
×4	स्वभाववादनिसस	9	99	47	90
ĭ	कर्मवादनिरास	9	99	43	1015
1	जन्मादिश्विषयक ईश्वरोपदेश	9	99	18	42
f	देवज्ञानस्य पुण्यादि (हिं.)	9	99	₹10	96.
7	नाति निर्णय	9	92		10 9
3	स्वधर्म	9	93	40	62
-	बाति जन्मना	9	99	49	28
1	आत्मा की जातिरहितता	9	92	47	42
4	अपरोक्ष झानी अनियोज्य	9	92	44	24
3	भात्मसाक्षात्कार के यिना यर्जादिधर्म जत्याज्य	9	93	46	64
ą	हर्मव त्यागाविका कम (हिं.)	2	99	49	4

तीर्थमाहात् <u>य</u> ्य	9			[5]
संगाङ्कर		9.5		€ 8,
सोमतीर्थ	9	93	3	60
वाराणसी में मणिकणिका	Ģ.	9 3	4	60
अयोग	9	91	9	49
गंगासायर	9	9.3	99	企 場
नर्महा	9	9.3	9.8	69
यमुना	7	9.3	38	29
सरस्वती	9	.3.5	9%	20
गोदावरी	7.	9.3	96	20
कृष्णवेणी	9.	9 =	₹0	23
सुवर्णमुखरी	9	4.4	22	22
कम्पा	9	9.3	34	62
कुटिला	?	9 3	44	83
मणि षुक्ता	9	9.4	96	73
	9	93	A.E	9.0
व्यागपुर में दिवरांगा	Ą	9.3	Eq. Eq.	9.0
गुह्मतीर्थ	9	3.5	E9	29
नहातीर्य	9	13	學气.	89
सूर्यपुष्करिणी	9	72	₽₽	93
इवैतारण्यादि में कावेरी	9	9.1	46	4.4
भीरकुण्ड	9	97	.99	83
देवतीर्थ	9	93	46	F.7
गन्धभादान	9	9.4	909	6.5
क्षानयोगपरम्परा-कथन	ą	7 9		26
सहेतुक बानयोग का प्रकृत	9	7	919	90
आत्मा द्वारा की क्यी सृष्टि	ą	7	1.4	
अविकारि-त्रैथिध्य (दी.)	2	3	B .4	29
द्यायेतर का निषेध (हिं.)	4		9	82
A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	٦	2	\$	88

सत्त्वक्षीभ ते महत्तत्त्वादि	2			
हाय की तीन मूर्तियाँ		2	8	8 4
शब्दावि स इंद्रियादि की सुदिट	4	₹	8-E	66
काल का सक्षण	7	2	9-0	2.5
प्रथम अरीरी	3	₹	9 ()	99
प्रसाद से सामर्थ्य	3	2	99	900
ज्ञान से ही मोक्ष	₹.	3	93-96	900
	9	8	98	900
ष्ट्रहस्पतिकृत ज्ञियस्तोत्र	٦	4	22-29	909
प्राणायाम से प्राज्यस्था	2	٩	79	909
ब्रह्मचर्या श्रभविधि	2	74	, ,	
मस्मिनिर्माण धारणादि (टी.)	9	3	S	9 0 2
ब्रह्मचर्य से संन्यास	3	*		903
गृहस्थात्रम-चिधि	9		94	904
किन है दान लिया जा सकता है (हिं.)		8		904
यति को भिक्षा देने की महत्ता	4	R	9	904
गृहस्थ एक बार भोजन करे	₹	8	36-38	700
_	2	8	930	900
त्रिपुण्ड्र-पारण आवश्यक	7	R	39	900
रुद्राक्ष धारण करे; झियार्चन करे	3	8	58	906
गार्हस्थ्य से संन्यास	4	A	38	904
जाश्रम-विकल्ब	3	R	39	908
वानप्रस्थाश्रम विधि	7	eq		908
पंचयज्ञ (टी.)	4	Q	9	990
पंचविष चान्द्रायण (टी.)	₹	44	8	990
यानप्रस्थ से संन्यास	3	Q.	95	999
संन्यासिविधि	₹	18,		997
चतुर्विध भिक्षु	2	Ę	9	993
कर्मत्यामी की ही ब्रह्मनिखा (दी.)	2	Ę	9	992
बुटीचक	\$	Ę	2-4	993

	बहुदक	3	ę	5 0 ()	7	-
	हंस	\$		₹ ~ 9()	993	
	परमहंस	3	Ę	99-98	993	
	प्रणवजप	3	Ę	94-30	993	
	उत्तमाश्रम से निम्नाश्रम में जाना निषिद्ध		Ę	96-38	994	
	वेषमात्र से संन्यासी पूज्य	3	Ę	3,9	994	
	तत्तदाश्रमियों के तत्तद् देवता	٩	馬	基 名	995	
	प्रायश्चित्तविधि	₹.	8	10-55	995	
	महापापी	3	O	1	9949	
	K-P	3.	lý (5	9919	
	ब्रह्महत्या का आपश्चित्त	4.	10.	3 6	99.5	
	तुरापान का प्रायश्चित	3	·10-	8-13	996	
	स्वर्णस्तेय का प्रायश्चित	9	v	98-93	996	
-	गुरुतल्पगमन का प्राथित्यत	ঽ	w	98-94	996	
	महापापिसंग का प्रायञ्चित	Ą	6	96-95	996	
	अगन्धागमन के प्रायश्चित्त	4	6	96-29	996	
3	सब पापों का प्रायिक्यत	₽:	· ·	34-35	990	
	दानधर्म का फल	২	4		979	
	अमाबास्यावि तिथियों पर विभिन्न दान	₹,	4	S 600 3	997	
	सब कामनाओं की सिद्धि के लिये विद्वत्सेयन	2	4	26	923	
	कामभेद ते पूज्य देवताओं का भेद	3	4	33-34	938	
	व्रत के लिये श्रद्धा-भक्ति अनिवार्य	2	4	3 %	938	
	शतरुद्रीय-अभ्यास का फल	2	۷	76-38	358	
	यमकाध्याय आदि के जप का फल	2	۷	80-83	938	
1	कर्म मैं प्रवृत्ति ग्रममूलक	2	4	88-80	939	
	पापकर्मी का फल	9	d _c		924	
	म्बाययस्तियाँ का ब्राइस्त्व (टी.)	ą	9	90	926	
	मन्तिरावि में उपदय करने का फल	ą	9	38-36	930	
1	जाचार्यनिदा-श्रवण का फल	9	9	25-616	930	

	_	Or .	३६	926
शन से ही सर्वपापनिवृत्ति	2	9	44	929
पिण्ड की उत्पत्ति	7	90		928
अहुति, सूर्यादि ऋम से शरीरोत्पत्ति	2	90	3	
- गर्थ में महादुःस	2	90	3.5	939
गर्भस्य की प्रतिका	3	90	53-88	933
अतल्मापहारी चोर	÷	90	₹ 9	433
बृहस्पतिकृत शिवस्तव	5	91)	86-44	458
नाडीचक्र-निस्पण	7	99		9 3 4
मूलाधा र	3	99	₹	434
मुख्य चतुदर्श नाडियाँ	\$	9 9	0.9-5	934
कुन्डली	2	77	9 2	938
दश प्राण	2	99	24-20	936
नाहियों के अधिष्ठाता देवता	2	99	30-80	936
देह में विषुव, अयन आदि	3	99	89-88	938
देह में तीर्थ	3.	9.9	40-49	980
आत्मतीर्थ	3	99	99	989
बृहत्पतिकृत महादेयस्तुति	R	99	69-66	989
स्तोत्र की फलशुति	5	99	62-90	983
नाडी-सुद्धि	3	92		888
साधनायोग्य स्थान	\$	99	3-4	988
प्राप्ययाम सहकृत चिन्तन	Q.	93	90-94	984
स्वात्मशुद्धिः विवेक	4	9 2	96	986
वम-विधि	2	9.3		980
दस यम	2	93	3	980
तितिक्षा-क्षमा (हिं.)	2	94	93	989
तानशुद्ध का अकर्तव्यक्षेष	2	93	₹9.	949
नियम-विधि	2	9.8		949
दस नियम	2	9.8	9-2	1.73

•				[9
ईझ्बर-यूजन	÷	98	90-99	943
चेदबाब स्मृति आदि की ध्यर्थता	3	18	96	943
यथाञ्चतिः न्तियादि कर्म अवस्यकर्तस्य (हिं.)	₹	9 or	98	948
व स्त	4	48	₹ 4	949
दिशरोधन	₹	48	২ড	944
आस्तर्भविषि	곡	9 %		946
नव मुख्य आसन	2	94	9-2	9 4 5
भ्यानाहर बैठकर ही करे (हिं.)	9	94	94	946
प्राप्तवापियि	¥	9 &		946
प्राणायाम प्रणयम्य	P	9 5	3	944
मात्रा-लक्षण (टी.)	3.	9 &	3	749
शूद व स्त्रिकों के लिये मंत्रान्तरपटित प्राणाय	ाम ३	98	98-94	950
प्राप्तवास के फल	ą	9 %	9 &	980
अधम, मध्यम, उत्तम प्रापायाम	₹"	91	3.0	9 € ()
चवरादि में प्राप्तथारण	₹	9 6	28	953
प्राणायाम से रोगनिवृत्ति	3	98	30	9 & 9
उत्कर्ष प्रापायस्य (वै.)	4	95	ÅÄ	953
वायुजय	Ą	9 &	86	983
कर्म से मोक्ष नहीं	4	9 &	48	9 & 4
प्रत्याहारविषि	à .	96		१६७
नानाविष प्रत्याहार	· ą	90	3-9€	960
गारणा-स्थान (टी.)	7	919	9 2	156
येदान्सक्तें बारा प्रोक्त अस्यकार	\$	919	9 6	9 & 8
भारणावित्वः	3	94		9
उकारादि वर्णी का प्रयोग	2	92	1	900
भारणा में औल प्रमाण (टी.)	Ą	96	4	990

[10]				
देह में पृथ्यादि य ब्रह्मादि	₹	96	8-6	990
मनआदि में धारणा	2	9.6	9-90	900
अन्य धारणा (परा धारणा)	4	9.4	99-97	909
एक और धारणा (पूजिता धारणा)	a	26	9.3	999
'क्रहोबाहम्' धारणा	₹	96	94-96	962
ध्यानवियि	3	9.4		403
सगुण्यान (उनार्थदेह)	2	9 4	9	902
परिवाद का ध्यानान्तर (हिरण्य/मधु आदि)	₹	98	4	9.19 3
गंगाधर का ध्यान	₹.	99	4	\$ 60 \$
विष्णुहृदय में क्षिय का ध्यान	P	98	99-29	908
ब्रह्मा के इदय में शिव का ध्यान	3	99	22-23	9194
अहंबुद्धि से ईक्षान का म्यान	2	98	33-38	956
निष्कल विषयक ध्यान	2	98	58	906
एस्यार्थमात्र का अनुसंधानात्मक ध्यान	2	99	79	900
विच्यु जादि के ध्यान	2	99	2.3	900
चानफल	2	99	38	900
समाधिनिरूप्य	8	₹-0		966
जीव का परमात्मा से अभेद	2	3.0	5-8	992
मायिक भेद	4	2 G	٩	909
विवेकधी समाधि	5	3.0	E- 2	909
प्रपंच का बुद्धि से विलयकर अदितीय में				
समाधि	₹	RO	8-93	909
प्रणय के सहारे समाधि	₹	₹0	99-98	940
आत्माऽभेद-चिंतनात्मक समाधि	3	3.0	20-29	969
उक्तसमापि का फल	3	30	77-79	929
ज्ञानयहात्स्य	4	3.0	39-36	963
नानी की प्रशंसा	4	3.0	38-80	908
बृहस्पति की कृतार्थता	₹	9.0	43	964
मुनियों को घेटमार्गस्थापन की प्रेरणा	२	3.0	43-48	968

				[13
झानयेगसण्ड की फलश्रुति	ç	ą.	ዓረ —Ę ŋ	१८६
मुक्ति आदि विषयक चतुर्विघ प्रक्न	3	9		965
अं करवन्दना	1	9	9-6	940
अनेक मुनियों का जियभक्ति में ततार रहना	\$	9	4-40	966
सुतजी के प्रति मुनियों का चतुर्विय प्रक्रन	1	g-	वे ० – वृ ८	99()
मुक्ति मेद	ą	ą		990
नारायण की तपश्चर्या	ŧ	4	9-6	983
प्रसन्न क्षिव का स्थलप वर्णन	3	4	९ १७	999
विष्णुकृत प्रश्न	1	7	देवे ५४	995
सालोक्यावि मुक्तियाँ (टी.)	ą	ঽ	26	368
शानफल मुक्ति	₹	ą	30-34	ने ए ४
अन्य योक्षों की अगरमता	ŧ	2	34 49	१९६
अन्य मोक्ष भी अत्यंत शुद्ध चित्त वालों को				
ही प्राप्य	1	÷.	3 6	ଷ କ କୃ
शंकरसारूप्य, मुकुन्दसारूप आदे भेद से				
मोक्षांतर पानाविष	3	2	\$4-8E	999
अधिकारि मेर से युमुक्षाभेद	₹	₹	80 86	9 84
परममोक्ष	₹	₹	49 —43	986
जी वन्युक्तिः	ą	÷	48-48	986
विदेहमुन्ति	₹	₹	40-46	9 9 9
मोक्त भी ध्यवहारमात्र	3	₹	५९-६0	9 % 8
मुक्ति के अपाय	Ę	₹		300
महातात्पर्य-अयान्तर तात्पर्य (थीः)	ŧ	3	¥	₹()9
संस्थकान से ही मोस	3	3	9-90	4 () ₹
कर्म से मोक्ष नहीं	ą	₹	92-93	⇒ () ≨
कर्म से जपर मोक्ष	₹	3	98	3.03
दिविष कर्म	ą	3	9 ધ	3.03
आन्तर कर्म का फल	3	3	9 6	≺0×
माह्य कर्म का फल	ą	ą	80	308
मानसकर्प की विशेषता	3	. 1	49	206
भी के देखांको जारा । जाता करता				

कर्मत्याय ज्ञान का अंग	Ę	3	43-43	304
यागणसी आदि में बास का महत्त्व	ą	3	te ą	२ () १
प्रणवजप से मरणान्तर ज्ञानलाभ	4	ą	ધ ધ	301
पंचाक्षर से भी मरणोत्तर ज्ञानप्राप्ति	ą	Ę	યદ્	₹0₹
शतरुद्रीय के जप से परा गति	3	Ę	44	905
अश्रद्धालु पापियों की मुक्ति का उपाय	ą	ą	Ę 9	₹9 ()
बेदारण्य माहात्म्य	ą	2	46	990
मोचक कथन	ą	Я		294
सरावती धर्णन	4	Х	₹ - ®	294
पशु आदि पदार्थ	ą	Å	9	₹9६
श्रुति का प्रामाण्य	3	Я	9 9	398
प्रमाणों में बलाबल (हिं.)	3	ž.	9 3	398
पाञ्चरात्रादि का येदबाह्यत्व	3	A	44-98	296
दक्षिणामूर्ति सम्बन्धी आरुवान	ą	ñ	ą 9	270
दक्षिणामूर्तिकस्थार्थ (हिं.)	4	ź	84	553
मोचकप्रद	1	ч		523
अाचार्य ही संसार से खुड़ाने वाले हैं	3	ч	2	च च ३
उत्तमादि त्रिविष आचार्य	1	ч	b"	3
पीच प्रकार के उत्तम आचार्य	1	Cq.	9	4+5
अतिवर्णाश्रमी का लक्षण	3	Cq.	9 € ~ ∄ ⊀	च च १९
बाधितानुवृत्ति ः तीन अविद्यावस्थाये (टी	3	ч	46	२२६
अतियर्णाश्रमी का अनुभव	4	4	3 3	296
क्षान उत्पन्न न होने के कारण	₹	Ę		539
शियद्रोह (हिं.)	4	Ę	₹	239
शिवभक्त के प्रति अपराध आदि अन्तराय	3	Ę	₹	939
काम, क्रोध आदि के सक्षण (हैं)	2	Ę	Ę	239
गौरक्षा न करना अग्रनोत्पत्ति में प्रतिबंधक	1	Ę	9 E,	233
जुआ, अस्झन्द प्रयोगादि से ज्ञान में विष्न	3	Ę,	२ २	२३३

				[13]
गुरूपससि व गुरुसेवा	₹	.9		93,9
विदान् की सेवा की महत्ता का आख्यान	Ę	٩	2	२३५
एक अन्य कथा	3	to	४९	480
क्षियज्ञान के विना मोक्ष असंभव	ş	19	6 Å	न्४३
हानी का उपदेशकत्य (टी)	3	٩	30	488
जीवन्युक्ति स्यामुभवकम्य (हिं.)	4	·9	92	SXA
देवोपदेञ	}	٤		२४६
देवों को विष्णुद्वास शिव से उपदेशग्रहण की				
प्रेरणा	3	٤	L	52€
व्याभ्रपुरमहिमा (टी)	ą	۵	8	२४६
यरच्छायाभित शिव (दक्षिणामूर्ति)	₹	٤	9 4	386
स्वाभाविक आनंदका और ज्ञान का दैक्क्षिण				
(2 1.)	₹	6	5-3	840
देवों के प्रति महादेव का उपदेश	₹	٤	3.3	સ ધ 9
बास्तव भेंद्र की निवृत्ति का निवेध (टी.)	3	ć	3.8	ર ષર
काजी आदि में मरण से मोस	\$	4	84	20%
बाराणसी की मुख्यता	ą.	4	40	⊋ ધ ઘ
ईश्चरनृत्य-दर्शन	ş	9		૨૫६
पुण्डरीकपुर में झिवनृत्य	3	*	G	२५६
क्षीनक को ऋग्वेद-प्रचार की शिवाजा	‡	9	5.8	446
आह्यलायन की क्षियभक्ति	3	9	₹	307
म्यासजी की उपस्थिति	3	9	3.3	> □ ↔
व्याससहित मुनियों का चाप्रपुर में दतानुष्यन	₹	۶,	3 6	₹\$0
मुनियों को शियदर्शन	3	٩	8.0	२६१
देवादिकृत रुद्रस्तुति (शतरुद्रिय के अनुसार)	₹	9	4.9—0.3	764
मु क्तिसम्ब की फलश्रुति	3	ς.	ও ৭	484
सर्ववेदार्थ का प्रका	(पूर्व)	9		⇒ દ પ
सकल-निष्कल द्रिणियान (टी.)	*	9	9	파토의
अधिकारि-निसपणःर्थं योत्रर्षियर्णन	Υ	9	₹-90	ે દુધ
भूत जी का प्रकार होना	ď	,	9 4	κĘĘ

]

सूत की आचार्यादिस्मृति	Å	ģ	9 &	₹ € 3
पर-अपर वेदार्थविभाग	x	ą		२६८
गरचेदार्थ	Я	ą	÷.	2 6 6
अपरवेदार्थ	8	9	3	२६८
माना से बंधन	R	ą	Ę	२६ ५
माया की ज्ञानियनाश्यता	γ	₹	19	255
जीवत्य और परत्य (टी.)	8	2	eg.	२६९
कल्पिवस्तु का नाश	R	ą	۷	२७ 0
यति झान में मुख्याधिकारी	Å	ą	90	२७0
चतुर्विष भिक्षुओं को परंपरा से व साक्षात्				
-	R	÷	93-94	500
परोक्षत्रहाविज्ञान का फल	ጸ	ź	9 E,	২ ৩ ব
अपरोक्ष ज्ञान का फल	Я	ą	919	২৩৭
परमहंस के लिए प्रणयमात्र जप्य	8	7	₹ %	493
उमार्थविग्रह ज्ञिव प्रणयार्थ	8	2	2.6	২ডঃ
अक्रीयभौतिक च आध्यात्मिक काक्षी (हिं)	ď	á	3 8	201
शतरुदीय की महिमा (हिं)	¥	4	⊉ ও	२७४
सस्यादिगुणों के कार्य	A	ş	83-84	294
डि थिम रज्ञ ः स्थूल छ सूक्ष्म	X	\$	86	२७६
तीन प्रकार के स्थूल यज्ञ	x	ę	86	२७६
दिवा ही भोय	¥	ą	48	२७६
शिव की अन्यों से असमानता	ъ	ş	40	700
मान का आ ग्रह नहीं (हिं)	8	ş	40	<i>१७७</i>
उत्पन्नज्ञान न्यक्ति के चिक्र	8	ą	६९	2186
कणाव आदि द्वारा निरूपित ज्ञान दर्शन नहीं	Х	₹	۷9	469
कर्मयहाँ का वैभय	8	3		265
करम्य, नित्य और नैमिसिक विभाग	¥	3	ą	२८२
शियपूजा दृष्टि से कर्म शीव्र मोवक	8	3	ŭ,	243
शिव ही यहाँ से पूष्य	8	1	10	
1514 51 4411 14 \$24	-	*	10	२८३

5.5				{ †5 }
निषिद्ध कर्म से भी ज़िवाराधन	٧	3	94-99	353
महायज्ञ	¥	ą	3.0	464
नास्तिक मतों का भी भगन्यय (हिं)	Y	ş	ફ લ્	३८६
वाचिक यह	¥	8		₹€0
धागुत्पत्ति	¥	8	9-4	220
परायाक्, पश्यन्ती (टी)	¥	¥	ą	२८८
Printer Communication Communic	x	ъ	8	444
वैस्तरी	ď	×	ų	222
अक्षरों का दिविध स्वस्य (टी.)	8	Я	۷	२८९
निदात्मक प्रणध	Y	x	٤	449
आयमंत्र, मंत्रशब्दार्थ	Ř	Å	9	480
प्राण है वेसरी की उत्पत्ति	Υ	R	99	980
সুত্ৰ হিৰে কা বাহুক	æ	ĸ	93	4 4 9
महामंत्र और मंत्र	8	8	38-20	292
मातृका शिव-ऋक्तिप्रतिपाविका	R	A	₹9-72	\$ 0 \$
अपद का पदभाव	Å	х	× ₹	203
वैखरी सर्वोपजीव्य	*	x	34-10	4 9 €
विविष मातृका	A	8	₹ ₹	२१४
प्रणचिक्कार	R	bę.		4 % E
प्र प्रणय	A	4	2	4 ° E
अपर प्रणय	¥	લ	3	३९६
प्रणथ येदसहर	A	વ	8-98	३१६
प्रणववैशिष्ट्य का हेतु	A	4	94-98	२५८
प्रणय का सर्वायभासकत्व	R	Úę.	30-33	385
प्रणय के ऋषि आदि	Я	ષ	२४	799
अवयधों के ऋषि आदि	¥	4	₹ 3	341414
भूणयज्य का फर्ल	Я	ધ્ય	₹ O — ₹ 9	309
गावत्री-विधरण	¥	Ę.		409
-44				

व्याहतियाँ य उनके ऋषि आदि	ĸ	Ę	9-4	303
मायत्री के ऋषि आदि	8	Ę	Ę,	101
गायत्री जिपदा और चतुष्पदा	ጵ	F	A	404
गायमी का स्हिर	¥	ξ.	<	404
वेचता व विनियोग	A	Ę	9	3 O 8
गायत्रीजप काल में ध्येच चिराडात्मक मूर्ति	8	Ę	90-98	308
उक्त मूर्ति का प्रेरक डिाय	8	Ę	9.9	ą () -
मन्त्रवर्णी का देहन्यास	ጸ	Ę	94-30	3 ⊕ €
वर्णी के ध्येष रंग	ď	Ę	२१ २८	₹() €
वर्णज्ञान का प्रयोजन	8	Ę	૨ ૧	\$ () \$
गायत्री मंत्र का अर्थ	Я	Ę	33-38	₹()↓
विनियोग	8	Ę	३१ ५८	∌ () €
हंमियम	8	19		39 €
आत्ममंत्र के ऋषि आदि	Å	v	9	395
जय के समग्र व्यान	ጃ	Ø	3	3 4 :
सध्यान जय का फल	¥	÷	٧	998
मध्यमाधिकारी के लिये जगविधि	8	9	4 2	393
उत्तमाधिकारी के लिए अनुसंधान विश्वान	8	v	ę	э э "
महाचाक्य का अर्थ	¥	19	9 3	398
सत्त्व आदि शब्दों का बोधकत्य (टी)	Å	Ø	98	334
भीव की सद् आदि स्पता	¥	9	9.4	398
चित् की अन्यशेषता नहीं	8	Ø	95.99	593
जीव की आनंदरूपता	¥	ŋ	20-29	390
जीव की पूर्जता	¥	6	ય ર	396
साक्षी होने से असंस्परिता	¥	v	2 3	३९८
साक्षास्कार का फल	8	19	२६	3 2 ()
नित्यसाधनयोग	Я	19	3 3	279
धडशर-विगरण	Я	٤		3 3 8

अस्ति आदि	r	,		[17]
न्यास		۷.	4	३२४
र्मभाक्षर	Å	~	R	इन्द
मंत्रार्थ	ß	Ł	q . ७	३२५
नमः शब्द का अर्थान्तर	R	4	2-55	3 4 5
प्रणकार्थ	ß,	۷	9.5	३२६
	R,	۷	94-98	3 7 19
वाच्यत्यादि अवास्त्रविक केटा क	Y	ė	90-29	394
तैर्धिकों का समन्वय (ते)	¥	۷	후국	229
शिव अनिषेद्य (हिं.)	ሄ	ć	4.8	व ४९
अधिवादभूमि — ज़िव	8	۷	२५	439
जपविषान	¥	e	719	445
विनियोग	¥	c	হড	777
पूजा	٧	٤	8.5	
ध्यानयज्ञ-सिव्हरणः	¥	9	4.4	334
निरुपाधिक ध्येय नहीं	Y	9	₹	1 14
असाधारण ध्येय मूर्ति	¥	,		કે ફેધ
अन्य उपाधियों से विक्रिष्ट का ध्यान	Y	,	३— ६	३३६
ध्यानमाह्यस्य	· Y		۷	430
	· ¥	9	8.6	3 89
शानयत		٩.	86	\$ 8.4
	8	90		₹४३
शानयतञ्ख्य का अर्थ (हिं) 	¥	5 ()	9	₹ 8 ₹
	Ŗ.	9.0	3	≨ ⊼á
ईञ्चरज्ञान	Å	90	8	3 8.8.
जीवज्ञान	¥	9 ()	ય	₹४४
मुस्य-अयुख्य आत्मा	¥	90	Ę	#AA
जीयस्थला का अधियांज्ञक	Υ	90	(g	3 48
प्रमाणकाम आदि	g.	70	ç-9	289
प्रमिति का स्वरूप	ፕ	90	9 ()	384

I	18]	•	90	90	३४५
	प्रमह-बिचार (हिं_)	Я	90	99	384
	प्रान्ति	A		99	3.2.2
	भ्रमशास्त्रनिष्कर्ष (हिं.)	R	90		386
	सन्देह	R	90	99	
	सन्देहतान का स्वरूपिययेचन (हिं)	R	90	99	186
	निञ्चय	R	90	9 3	3,8.5
	निरुक्यज्ञान का परिष्कृतरूप (हिं.)	8	90	9 २	388
	संशयादि चित्तवृत्ति केसे ? (हिं.)	a"	90	9 =	₹8€
	प्रामाच्य	¥	90	9.3	\$ A.D.
	भ्रम में यृत्तिद्वय (टी.)	8	90	9 4	多尽态
	अभावविद्यान	Я	90	94	285
	अनुपरुव्यि (हिं)	Я	90	9 ધ	3 & @
	प्रत्यक्ष, अनुभाज	8	90	9 ६	389
	वेदान्ताभिमत प्रत्यक (हिं.)	ጸ	90	9 ६	3.8.C
	उपमिति, अर्थापत्ति	ķ	90	90	386
	उपमान (हिं.)	8	90	90	380
	डिविय अर्थापत्ति (हिं.)	8	90	9 છ	₹36
	शान्तकान	R	90	96	३४९
	शास्त्री प्रमा (हिं)	R	90	9 6	284
	झन्द अर्थ का निश् नाधक है	x	9.0	96	386
	इस्ट : अक्तर, पद, वाक्य	ጸ	90	9.8	3 % €
	यावक कीन	8	90	₹0	340
	वर्षों की बाचतकता, स्कोटवाद (हिं.)	8	90	₹0	§ 40
	वास्पों की याचकता	A	90	39	349
	सन्द प्रकाशक है (हिं.)	R	90	₹9	340
	बाल्य	Я	90	२ इ	३५९
	आकांशावि का निकपम (हिं.)	R	90	₹ ₹	349
	ब्रह्म अनवार्थ, वाक्यार्थ (हि.)	A	10	₹३	३ ५ १

				[19
महावाक्य, अयांतरवाक्य	2	90	२ ४	₹ € च
	Я	9 ()	+ પ	રૂધ ર
अव्दर्शक्ति (हिं)	x	9 ()	રપ	ģαş
अन्यितामिधान (हिं.)	Я	90	₽ ६	342
बाक्यार्थ की लक्ष्यमाणता (दी.)	¥	90	4 %	343
द्विविध तास्पर्य	ď	90	হ ও	343
चिथि, निषेध और सिद्धार्थकोपक वाक्य	Я	90	98-35	348
सिद्धार्थवोधक का विस्तार	ď	90	\$ 0	348
क्षिय में प्रमाणों की गति नहीं	¥	90	33-38	કૃપ ધ
ब्रह्म की सर्धप्रभाणधेद्यत्योक्ति का तात्पर्य (टी)	A	90	30	३५६
स्थाभाविक बंधन असंगत	Х	90	₹ ₹	३५६
भेद <u>औपाधिक</u>	x	90	8.5	३५ ৩
अपारियञ्च का अर्थ (हिं. <u>)</u>	A	90	Яβ	343
स्वप्रकास चिद्रूप से भेद नहीं	R	90	a, s,	₹u∠
आत्ममेदयाद का खण्डन	ጸ	9.0	80	₹48
घटादि का भेद भी धर्मसिड	ጸ	90	40-49	3 E ()
त्रिविध सत्त्व (दी)	Х	90	43	\$& O
स्वस्यतः और वर्मतः भेद असिद्ध	g	9 ()	ψą	३६ १
प्रामाकर य वैशेषिक मत (दी.)	R	9 ()	41	३६१
स्यस्पभेद पक्ष का निराकरण (टी)	8	90	9.3	45 9
धर्मभेदपक्ष का निराकरण	x	90	48	នុខ្ទ
भेदनिस्त्यण की अलंभवता	Å	9.0	48	इह्व
तु ति से भेदनिवेध	R	90	ધ્	३६२
भेद में प्रमाण का अभाव (हिं.)	K	90	પ્યુપ	३६२
अमेवज्ञान का फल	R	9 ()	પ દ્વ	353
आत्मयाजी को स्वाराज्यलाभ	8	9 ()	£ 0	14 ৪
ह्मानयङ्गयेभय	ጸ	90	4 4-93	335
ज्ञानयत-विशेष (हृश्य की कल्पितला)	¥	99		966

पार्वनी ब्रह्मविद्या-प्रदायिनी	¥	9.3	5.4	[21]
यही सर्वाराध्या	8	43	9.R	\$ < 9
परिपूर्णशिवसर्वान	y		3 &	३८७
भोगी की स्वच्छन्दता	3.	9.1	8.5	25E
ज्ञानयसंथिशेष (पंचब्रहा)		4 5	80	356
निर्विकार शिव	8	9.8		190
	Я	98	₹	180
पाँच प्रकार से अवस्थित शिव	R	9.8	á A.	₹ % 9
सन्दादि की ईशानादिसपता	ß	98	lę	३९१
श्रोत्रादि के अध्यात्मादिमेद (टी.)	Я	98	9.7	₹ ₹ ₹
पैर आदि की इंशानादिता	A	98	3 8	3 9 3
मन आदि पंचब्रह्मरूप	Я	98	96	\$9\$
पंचप्राप्य के प्रातिस्थिक देवता	8	98	2.3	388
निवृति आदि कलाओं की पंचब्रह्मस्पता	A	3.8	२६—२७	\$68
निवृत्ति आदि कलाओं का स्वस्प (टी.)	R	98	२६—२७	३ ९४
'बासोऽहम्' आदि भ्रम	ጸ	98	\$ 10	३९६
विवेक प्रदीप	¥	98	\$ 4-8 Q	393
सावस्य	A	98	1.5	390
परमेक्बर ही कारण (दी.)	¥	98	አ ጸ	393
प्रपंच का सदा क्षीय से अभेद (हि.)	У	3 8	૪૫	396
अज्ञानात्मा ही अङ्कतन (हिं)	¥	98	४६	3 5 5
जीवन्युक्त (हिं.)	Å	98	40	३९९
क्षियकृषा से ज्ञान	R	9 8	43	X0.0
मनःश्रुद्धि के अनुसार देवप्रसाद	R	98	५६—५७	800
श्रमणावि का स्वस्य (दी.)	У	9.8	46	809
क्षिवप्रसाद से ही सर्वप्राप्ति	Å	98	96-60	¥() 9
ज्ञानविशेषयोग	¥	94		¥0 ×
सत्ता-विवार	8	94	2	४०२

[22]				
	सत्ताजित का निषेष	Я	9 4	3-2	8 ⊕3
	सत्ता व घटादि का भेदाहि असंगत	Å	94	t _K	8.03
	सत्ताप्रतीति भ्रम है	R	9 4	۷	8.0 8
	ब्रह्म ही सत्ताः है	å	94	۷	8() 8
	सत्ताहाव्यार्थ (हि)	γ	94	4	Å() Å
	अव्यायृत्त अननुयत यस्तु (टी.)	Å	9 42	۷	808
	कार्य की कारणात्मकता	A	9 u	9 ₹	४() ५
	निरवयय की विरुद्धार्थी के प्रति अधिष्ठानना	Я	94	9 %	¥04
	अंभु की सर्वरूपना	Я	94	94	₹0€
	सर्वत्र क्षिवदर्शन कह फल	R	94	2.5	80a
	इस्म से कर्मनिष्कित (टी.)	x	9 4	5.8	8() &
	बाधसामानाधिकरण्य	Я	94	÷ 00	8 () c
	यस्तुतः बाध्यः नहीं	A	9 U	3 6-3 G	808
	मोक्ष निरितशय (टी.)	Х	94	3 9	806
	क्षानोत्पत्ति के कारण	Я	9 Ę		890
	देक्ता-प्रदर्थना	У	98	7	890
	ब्रह्मचारी आदि के लिये होम	R	9 &	90	899
	गुरुसेबा	ጸ	9 ६	9 2	899
	वेदान्तश्रयण	¥	9 %	9 3	899
	लिंगार्चन	A	9 %	98	899
	द्र-द्रसहिष्णुता	γ	9 6	9 14	899
	स्त्रक्षिधारण	Я	9 %	4 E,	893
	पंडक्षरजप	¥	9 €	98-96	892
	नीचों से असम्पर्क	¥	9 €	98	893
	THE RESERVE OF THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NAMED IN COLUMN TW	¥	9 6	29	892
	उत्सव सेवा	8	9 Ę	5 fé	892
	क्षियनिर्माल्य-प्राह्मता का निर्णय (हिं.)	8	9 %	78	893
	गन्धपुष्पादि की अभाहाता (टी.)	8	9 %	₹ %	894
				-	- / 4

युर्मिक्ट की पवित्रता	¥	9 %	콧리	[23
लांछन-निर्मय	R	9%	⊼9 —11	898
भस्म का स्यब्द	¥	95	Ą C	8.3 Å
्रकात का सान, मुक्त की मुक्ति	R	96		ধি শ্ব
वैसम्ब	8.	90	र्वे द	র ব হ
शोधन अशोधनाच्याम से इच्छा-जिहीर्षा	¥	90		\$3:0
देहादि की जुगुप्सितहा	R .	919	Ą	294
गर्भादिदुःख	8		9°F	ያ የ
बात्यतुः स	*	9.0	84	8-3
यीवनदुः ल		9.0	43	素差束
	*	30	43	४२५
देह में 'मैं-मेरा' निक्चय होने से सहरा दुःस	£	90	48	356
मुलेका ध्रम से	R	919	a0	४२९
विरक्त का ही झानप्राप्ति	8	919	6.6	A4.0
अनित्यवस्तु विचार	8	36		830
अनात्मा जड अनित्य	¥	9.4	†	¥3 9
अकार्य भी अनित्य	¥	ያረ	3.	233
अनित्यत्व में बत्नात्मत्व हेतु की परीक्षा (टी.)	8	96	$\frac{1}{2} - \Re$	634
भाववस्तु के लिये पृथक् नियम मानना व्यर्थ	R	98	4 —ξ	×39
तर्क प्रमाण का अनुवाहक	YE	96	10	報等分
श्रुति का निरेपस प्रामाण्य (हि.)	8	96	4	73
वस्य प्रमाणान्तर का अधिषय	y	96	ģ .	9 -2 ±
श्रुत्यनुकूल प्रमाणान्तरों की विषयता स्वीकाय				
(程)	¥	9 4	য্	/4
अ भ्द की निरपेक्षता का उपपादन (टी)	8	96		i;
अप्रामाणिक तर्क की अनर्षहेतुता का आखान	x	96	99	3 4 3
तर्क की अप्रतिष्ठा	¥	9.4	94	238
घडकरमहिमा	×	94	9.5	X3:4
यम द्वारा परिहरणीय लोग	8.	92	३५ ४३	8.5 8
यम द्वारा इन्तव्य स्रोव	¥	96	84-48	SEY

24]	¥	96	६४	838
हेतुक महापापी है	У	92	Ę,Ę,	880
वेराग्यंबनक				
अनित्यत्वज्ञानं आवश्यकः, न कि असत्यत्यकान		9 ¢	ĘĘ	840
(₹.).	Ř	96	63	889
वैराप्य का लक्षण (हिं)	Я		\$Z	880
राग से ही दुःख	Я	92	90	880
अनित्यत्व का विस्तार	ጸ	3 6		
परलोक का अनित्पत्य	Y	96	şu	889
<u>मूतियलय</u>	Å	96	এছ	४ व न
ब्रह्मा आदि की जनित्यता	8	96	40	8.8.5
परभेड्यर ही नित्य	¥	9 ८	۷3	283
नित्प यस्कुविचार	8	98		883
नित्यवस्तु का स्थरूप	ķ	9.5	₹	ጸጸጸ
चित् अनित्य नहीं	X	99	ą	888
'में नहीं था या रहूँगा' का विक्लेषण (हिं	.) в	98	\$	አ .ጸ.ጸ
ज्ञान की नित्यता	Y	99	8	૪ ૪૫
शान की अनित्यता प्रतीति का उपपादम (fi	ğ) я	9 8	¥	889
'प्रत्यय' इत्य का अर्थ	x	9 9	Ę	४४६
इस्तिमात्र का यिनाश नहीं	¥	98	٤	አ ጸ <i>ደ</i>
इ हान की अभिव्यक्ति का सार प र्थ (हिं.)	Я	98	99	880
्सादी	*	99	१२—२५	888
विशिष्ट धर्म	A	40		४५१
विविध धर्म	A	30	93	४५३
फेंच्यावि मत्तसमन्ययः (हिं.)	8	3.0	ፇቘ	843
वैष्णवीं से हैवों की श्रेष्टता का आधार (ਫ਼ਿੰ.)∀	Q P	₹0	848
सर्वश्रेष्ठ धर्म : ज्ञान	¥	9.0	40	४५६
क्षिवज्ञान ही गास्तविक ज्ञान है	¥	a 0	39	846
श्रीतधर्म हो वास्तविक धर्म है	8	3.0	इ२	846
वेदमहत्ता	X	₹0	3 8	४५७
			4.5	a 4 B

				[25]
संक्षिप्त उपदेश	A	3.0	8,5	840
गु क्तिसाधन	A	5.3		846
साधनविषयक ईञ्चरोपरेश	A.	२ 9	98	840
साधन की गुप्तता (हिं.)	A	₹9	98	\$.£ ()
भिसुधर्म	Я	₹9	4.1	አ ታ
श्रवणादि के लक्षण (टी.)	8,	≥ 9	२५—२६	¥6 1
देक्ताओं व मुनियों की एकवाक्यता	g	₹9	3 €-5 €	४६४
मार्गों की प्रामाणिकता	Ŗ	5.5		⊀६ ५
शंकर ही सर्वशास्त्रनिर्माता	¥	२ २	२—६	४६५
झियनिर्मित ज्ञास्त्रों के ही विष्णु आदि				
ब्याख्याता हैं	R	5.5	૮ ૧	४६६
समन्वय और तारतम्य (हिं)	ช์	२२	9	४६ ६
सब मार्ग शिवप्राप्ति के	ጸ	55	4 (୪६६
उत्कृष्ट मार्ग की प्राप्ति शिवकृषा से	ጸ	₹ च	99-99	४६ ७
औपनिषद ज्ञान ही विद्या	8	2 2	9 90	इ ६८
अन्य मार्ग क्रम से प्रमाण	R	₹ ₹	96-98	४६्९
वैदिक अन्य मार्ग पर न चले	8	३ व	₹9	०६ °
वादों के मतभेद (टी.)	¥	२ २	€3~5A	< \$ 1.1
मार्गान्तरों का प्रयोजन	8	२ व	२ ६	201
र्शकरप्रसाव	R	₹ ₹		623
THE REAL PROPERTY.	Ŗ.	9 3	0	85 4
अप्रमाद आवश्यक	Х	2.3	9 ६	16.8
प्रण्यक्रेट्य	8	9.3	2.9	808
बिभिन्न देवताओं की कृपा से विभिन्न फल	R	₹ ₹	50-54	*38
महादेवप्रसाद स्वयं समर्थ	Я	4.4	50-55	X10 4
सब मुक्त होते हैं	8	4 4	39-1€	894
प्रसादमाहात्स्य	A	₹₹	3@-10	8.3€
शिवप्रमाद के विना भोग-मोक्ष असंभव	¥	२३	ጸራ	100
दिखप्रसाद से शिवप्रसाद	Å	२ ३	40	852

4				
प्रतादवैभय	Я	२४		806
दुर्घट सूद्र की कथा	8	२४	5	YOC
म्याप्रभुर गह त्ता	8	२४	90	406
शृह का पंचाक्षर में अधिकारविचार (टी)	¥	38	२२	860
प्रसादवैभव	8	સુ હત્		829
सन्यसम्ब की कथा	8	२५	2	४८२
विष्णुस्तुति	¥	२५	90-3¥	864
परमेश्यर का विष्णु से अतिशय	¥	ર્ધ	38-85	844
महावेच समास्था का सार्थक्य	8	રૃષ	49	820
शिवभक्ति विचार	Y	२६		866
नाना भक्तियाँ	8	२ ६	₹—३ ₹	४८९
शिव की साक्षाव् भक्ति	8	२६	3 8	४९३
येवान्तर्झों ढारा प्रोक्त भक्ति	8	9.6	ąıo	863
गरम पद का स्वरूप	ď	₹ Ø	·	868
परिश्वस्वस्य	R	₹७	3	8.4.8
सन्वितालन्दमय संसार (हिं.)	R	30	3	४९४
उत्कर्ष परम्परा	R	२७	74	844
समध्दि-व्यष्टि शन्दीं का अर्थ (हिं.)	Х	२७	ě.	884
विभूतियों में वैशिष्ट्य	8	२७	Ę	४९६
नागादेवयाद श्रील-स्मार्त नहीं (हि.)	¥	२७	٤	४९७
परतत्त्व	¥	२ ড়	ą	860
आ नंदमीमांसा	¥	२७	90-93	R62
भूमानन्द	8	২ ত	93	808
विशेषण, उपाधि, उपलक्षण (हिं)	8	20	43	896
रुद्रादि भेद से एक शिव स्थित हैं	Å	ৰ ৩	98	896
देखिभाग आवहारिक	¥	\$ \ <u>\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\</u>	96	
क्रिव ही ध्येय	¥	20	43	866
निर्विकल्प ज्ञान से मोक्ष	¥	२७		400
		4.00	₹ ५	900

				[27]
ज़िल के नाम-स्त्र नहीं	Y	9.0	24	409
यरतन्त्र के विक्रिध्ट न्हम	x	7.0	⇒ €	409
अन्य नाम गीण	R	२७	₹0	41)9
मुख्य मूर्ति	ጸ	5 @	39	409
रुद्ध से परनामों कर सम्बन्ध	x	5 @	३६ ३८	404
द्विायलिंग का स्वरूप	Y	3.5		408
द्याय ही लिंग हैं	8	유스	7	418
लिंगशब्द क्षिबमूर्ति में सह (हिं.)	Я	२८	₹	4 () x
द्वाद की अस्वप्रकाशता असंभय	R	26	3-8	408
स्वप्रकाञ्चल्य-निर्वचन (हिं)	R	20	ч	4 (+8
शुन्पनिरस्कृति	A	27	E _t	4 () 4
वृत्तिव्याप्ति का स्वीकार (टी)	X	२८	9	५ () ६
'झिब का लिंग' इस चुत्पनि की परीक्षा	¥	35	90-93	५ () ६
बहुबिए स्टिंग	ጸ	46	98-99	५०६
ज्ञान ही लिंग	X	२८	5 ()	402
'आलय (मूर्ति आदि, स्टिंग है' इसका विचार	X	24	4.9	414
चैतन सदा सत्य	R	₹८	4.3	* 4
जब मति शसत्यतः	8	₹ €	98-44	19 1
निव किसी पर आधारित नहीं	Я	24	⊋ Ę	4 4 4
मेदशामाण्य (टी)	¥	25	₹ ८	499
बाणिलगादि का उपयोग	¥	국소	\$ 0	493
लिंगक्रम्य की व्युत्पत्ति	¥	२८	3 9	પ્9 ↔
सत्य का अधिलय	¥	3.4	38	५१३
क्सीर में लिंग	x	२८	3 %	4年前
ज्ञान ही शिवार्चन	¥	44	४९	ષ૧૬
क्रिबस्था न	8	२९		496
मा तृब श्वरस्तोत्र	¥	न९	७—६ ५	49.0
असरग्रहण की सार्थकत्व (टी.)	Ж	48	9	49.0

औकारमाहात्म्ब (टी.)	*	17	, 90	440
बिन्दु-बीप	¥	9.5	58	658
विसर्गार्थ (टी.)	Nr.	54	. २२	489
अहित संग्रह (टी)	¥	\$ 6	२९	433
क्षिव ही यदार्थ	ጸ	25	AC	લેકલ
ध्वनि—स्फोट (टी)	¥	3.6	\$0	43.6
उपा सना में आयृति अलंकार (टी.)	x	7.5	ff.st.	458
अध्यात्म शिवस्पाय	¥	3.6	68	4 € 0
अधिभूत जिवस्यान	A	75	90	419
पुण्डरीकपुर का माहात्म्य	ß	₹९	८९१०२	435
मस्मवारण-वैभव	À	40		434
महाभस्म	¥	10	ą	ष३६
महाभस्मजाता का माहात्म्यं	Å	30	4-97	५३६
खस्यभस्य	¥	10	93	436
तत्तदंय के लिए मंत्र (धै।)	¥	₹.0	93-7¥	416
मरमभिर्मा ण (दी.)	A	10	45-32	好多么
भस्म स्द्रारिनका वीर्ख (टी)	R	10	93-98	436
भस्मस्नानकल (दी.)	*	10.	98-98	412
अभिकारिभेद से भस्मभेद	R	10	94-90	५३९
बूलनार्थ मंत्र	¥	40	96	439
त्रिपुण्ड्रार्थ मं श	8	40	9 6	938
त्रिपुण्ड्रघारण-वैक्षिष्ट्य (दी)	g	30	98	* 3 P
आश्रमभेद से मंत्रभेद	¥	30	30-38	4(3.0)
उ बूलन व त्रिपुण्ड ज्ञान का अंव	*	40	5 14	\$(3°()
कालाग्निस्डोपनिषत् में मत्म्क्राप्य सिद्धियाँ रही.)	¥	90	3 3	₹ ₹ ÷
उद्गलम व त्रिपुण्ड्रधारण के फल व प्रयोजन	x	30	\$ &— <()	28.5
भस्य न यारण करने की निंदा	¥	10	49-49	વક્ષ
भस्यवर्शसा	*	30	६०-६२	488

				[29]
जीमाहोभयगिसक्य (शिवदीतिकरनिस्पण)	Я	₹9		480
त्रिय को प्रिय	k	₹9	२—३३	৭ ४७
सूश्रूषामाहात्म्य का आस्थान	Я	3,9	₹ \$ — \$ \$	488
मिति न होनें के कारण	8	₹ २		440
गौतमकया	8	३ २	₹	લય 🖯
गैतम का आप	8	₽¥	34-88	449
परतांचनाम	R	Ęβ		448
क्रिय आदि नाम	х	33	२— २५	પ્યુધિ ધર
अप्तिर्बुष्ट्य का निरुक्त (टी.)	8	33	9	دو تو ه
पुनरुक्त नामों का तात्पर्व (दी.)	x	3.5	२६	4 ξ ()
निंदा का अभिप्राय (हिं.)	A	₹₹	3 3	५६१
महादेव के प्रसाद के कारण	¥	έŖ		ષ હ્
सम्प्रदाय ऋदार्थ (हिं.)	Я	58	9	५६२
शिष्यमुण	Я	38	ź	षद्
आसार्यमुण	R	48	3	ધ દ્વે ૨
गुरूपसतिः	9.	3 4	४−६	ध६३
दीशा	Я	३४	3	५६३
मन्यिकेदन (टी)	x	ž×	98	ય લ્ ૪
अक्तिपात	8	\$8	4 E 4 3	낙통 박
कर्मसान्य अपेक्षित	R	32	κ ()	98.4
बिना अक्तिपात के भी मोश संभव	8	₹४	24	Un Eq. Eq.
शक्तिपत का रहस्यांश (टी.)	A	\$8	33	4 Eq. S
सम्प्रदायपरेपस	Å	34		५६८
आदिगुरु	¥	34	₹	447
सम्प्रदाय न जानने की निंदा	R	₹५	۷ ۹ 0	વદ્દ
नमस्कार्य	R	34	98 -93	ધ્ દ્
मूर्खिक्रच्या की उपदेश न दे	ß	34	9 €	430
पर्रपराबीम ज्ञान का उपकारक	¥	ą 4	२२	40()

20]				
सवः मुक्ति देने बाले क्षेत्र की महिमा	¥	3.6		५७२
क्षित में प्रपंचितलय (ही.)	8	₹য়	ષ	५७ इ
दक्षिणकैलास	¥	₹६	90	ዛወሄ
संवत्सरव्रत	8	₹६	94	ابرى دې
मुक्ति के उपाय	x	ৰূ ত		460
जैविनी का प्रदन	X	₹19	ų	460
व्यास का उत्तर	A	₹%	ā,	440
न्यात्रपुर	¥	\$ G	90	449
दक्षिण कैलास, बृद्धाचलादि नाना स्थान	¥	3.9	93	469
हालास्य-माहात्म्य की कथा	A	318	96	१८२
मु क्तिसस्यन	¥	36		468
परमे ञ्चरस्तोत्र	8	3.6	५ ६९	428
द्विविध सामानाधिकरच्य (टी.)	ጸ	36	Ę	964
मोक्ष नित्यप्राप्त	Å	46	% হ	499
प्राप्य मोल की परीक्षा	૪	36	63	493
अभाव की अलाध्यता	¥	34	4	483
<u>म्बंस नित्य नहीं</u>	×	\$4	4 3	पद्य
अचेतनत्व अनित्यता का प्रयोजक	Я	3.6	९६—९७	- <i>₹ €</i>
ज्ञान-कर्म का समुच्चय असंभव	ß	34	99-900	५९६
ज्ञानी का कर्म में अनिधकार (हिं.)	Ř	3.5	90)	१९७
सारूप्यादि का साधन कर्म	8	3.6	9 () 9	५२।\$
नारितक्यनिषेध	X	३ ८	9 () 4	486
वेदों का अविरोध	ጸ	9 \$		• ६ ५
अनुभव आवश्यकत्व, समन्यय अनियार्ग (हिं)	g	₹ ९	F	~ 4 9
बेद में विषयभेद	R	9.5	4 −3	s 0 0
वैत अध्यस्त	У	38	8 — ₽	£) (
अदैत अनध्यस्त	Я	ે ૬	o 90	E+ 9
ञ्चन्य अधिष्ठान महीं (हिं.)	ሄ	₹ 9	9 4	ξ.(

				[31
प्रत्यक्षावि के अधिषय में तुति प्रमाण	R	3.6	94	€ () ≷
कुति को प्रमाणान्तर-संवाद नहीं वाहिये	A	₹9	5.9	E () §
प्रयोजनवञ्च प्रामाण्य	R	3 9	20-29	€ (1) ₹
अञ्चननिवृत्ति द्वारा अद्वयबोधन	¥	\$8	48	美山林
थिषिमुख से बोधन	¥	7 F	ર પ	£)4
शक्ति से अविषयता (हिं)	¥	9 \$	ર પ	E () 4
महावाक्य प्रयूति	Å	3 9	२६	ξ0ξ
जीवत्य अस्वाभविक	8	39	₹\$-+€	c) %
मणि आदि केवल प्रतिबंधक, नाशक नहीं	¥	28	₹ a	800
रसवीर्य से वास्तविक स्वणता नहीं	¥	3 9	30-30	£1 .
साम्य ही भोक्ष है इस वाद की परीक्षा	å	३९	र्व ६	\$ · e>
सकार्य अझान का ब्रसन	¥	3 6	4.9	ą -
मोक्ष में जगत् का अभाव-इस का समीक्षण	Я	3 8	48-46	590
भावादैत अस्वीकृत (हि.)	Я	3 9	45	Ę.
एकत्वबोधक क्षक्य दोषी	ð	3 8	ξĐ	
ब्रह्मकाण्ड कर्महोध नहीं	Я	16	\$ 9	
सुनिलिंगादियशात् भी ऋदशान कर्मांग नहीं हि) v	3 9	- ৯ খ	- 3
अधिकारिभेदयञ मी समुच्चय नहीं	¥	₹ ९	26	
विदरणानुसार समुच्चयनिरास (हिं)	8	3.9	2 ن	€ 2
कर्मभाग भी ब्रह्मकाण्ड का साक्षात् द्वीय नहीं	8	38	43	8-6
श्रवणावि करण है	8	₹ ९	42-63	हुव 🕫
ज्ञा न को इतरानपेक्षा	8	₹ ?	43-48	€ ≈ 9
कर्म का उपकारक्रम	R	99	66	€ ₹ O
सर्वसिद्धि करने याले धर्म	A	٨0		६२२
विकिय कर्म	Я	8.0	₹	દ , √ 4
कायिक सर्वसिक्षिप्रद कर्म	Υ	80	3	\$ 2.5
वाचिक तथाविष कर्न	Å	\$0	5 4	६ २
भानस तथाविष कर्म	¥	8.0	4-99	६२व
-				

J

उक्त कमें की महत्ता	A	A O	70	६२४
पातक्रिमेचार	¥	89		६२५
दस पातक (महापातकादि)	×	89	3-4	ह्२५
महत्पातक	R	ጸዓ	Ę®	₹ ₹ ५
अतिपालक	A	89	9-3	६ २५
महत्त्वर्थे (हि.)	¥	89	4	६२५
प्रात्सींगक पाप	8.	89	90-98	६२६
	A	ৰ ণ	97-96	६२६
उपप्रतक (मुख्यः	¥	¥9	94-46	६२६
उपप्रतक (गोण	R	89	59-50	६२७
जातिश्रंशकर पाप	Х	89	36-39	इ.२७
संकीर्णकरण	ጸ	89	9.0	દ્રહ
अपात्रीकरण	*	89	₹ 9	ह् ३.७
मलाबह	A	8.9	३२	4 4 19
प्रकीर्ध	Я	ಕ 9	3.3	ξ ∢ ζ
क्षत्रियादि के विश्लेष पाप	x	89	38-36	६५८
प्रायदिवत्त	R	<i>8</i> ₹		ह्य
येदांतज्ञान सब पायों का सहक	8	% P	3	4 + 9
शानी को कर्म बंधन नहीं-इसकी उपपत्ति				
_र दी.	8	स २	Į	a = 9
साक्षिरूप आत्मा का कर्मसंबंघ नहीं	A	84	8-92	\$ a0
वेहादि में अहंथी याले का ही कर्मसंबंध	ă´	8.5	23	見なら
परोक्ष-अपरोक्ष बानों का कल	¥	8 २	३५३६	§ d §
ब्रह्मभावना भी प्रायदिवत	x	8.5	8 ()	539
प्रायश्चित्तार्थं मूर्तिच्यान	x	8.5	83-49	হৈঞ্জ
प्रायक्वितात्मक जप	8	8.5	47-54	£36
प्राणायाम ते प्रायश्चित	R	83	91,	ξ & ()
प्रातः उठकर 'महादेच' कहने से प्रायश्चित्त	Å	8.5	90	£89
ब्राह्मभुहूर्त में शिवकीर्तन से प्रायश्चित	¥	8.5	۷0	
		-	- 0	६४९

፠

RR

६६३

30

म्यावहारिक ञुद्धि

ο.	A	1
ال	4	я

34				
महाभावना से शुद्धि	Я	გ .გ	₹३	រិខ្ធ
यर्तन आदि की शुद्धि	В	ጲኧ	3.4	६६५
शौष-आधरण 🕷 हिए स्पर्तन्य नियम	У	ÄÄ	85-83	६६६
ुअप्र आदि की शुद्धि	४	ÅX	81	ន្ឌ្ត
वस्त्रादि की ग्रुद्धि	¥	ዴ ጲ	४९	६६६
द्रच बस्तुओं की शुद्धि	8	ጸጻ	લ ૧	६६७
तैजस आदि पात्रों की शुद्धि	8	ጸጸ	લ્ ડ	६६७
स्पर्शदोष कहाँ नहीं	¥	88	६१	६६८
सवदोधनिवर्तक ब्रह्मदृष्टि	8	ጸጸ	€ ३	६६८
कारणाऽभेद विचार से शुद्धि	8.	88	é à	६६९
अभस्य से नियृत्ति	8	25 44		દ્ઙΩ
आहारशुद्धि से शिवतान	8	84	₹	₹9(
ग्रन्थियाँ (दी.)	¥	૪હ	3	₹७()
अमस्यभक्षण से भ्रमजान	8	84	A	€ ⊅ ()
अज्ञानी के लिए ही अमध्य	A	84	\$	६३१
ज्ञानी के लिए सारा जगत् भाष्य	8	र्ज ५	10	६७३
जगत् भोज्य और मध्येत	ð	5°4	99	10-
जगत् का भक्षण और सर्जन	*	8.0	9 3	· ·
सुपुप्ति में सर्वविलय का अर्थ (हिं)	8	8.4	9 3	€ 9 -
स्वस्यरूप का स्वयं भीग	×	४५	94	६७३
ब्रह्मातिरिक्त सत्ता नहीं	Я	Rai	9 &	603
मावा अविचारितस्पिणी	¥	84	3 P	६७३
बांपिल माया की प्रतीति	R	४५	3.0	६६४
अस्तव	¥	४५	₹ ४	६ <i>७४</i>
देदबाह्य द्वारा स्पृष्ट खाने योग्य नहीं	Я	ફુલ	₹ 8	€ ≥ 4
पं चनख	8	84	89	真姿鬼
मांस न स्ताना ही स्पृतियों का अभिप्राय (वि	हें)४	र्ड ५	४१	६३६
क्षंत्रियादि भी अभक्ष्य वर्जन करें	8	४५	88	६७८

अठारह विद्यार्थे	٧	૪૫	43	[35 {%
मृत्यु के सूचक	8	ΥĘ		Esse
अरिष्टों की उपादेयता (टी.)	¥	ΧĒ	9	£ 10 9
माना अरिष्ट	Х	УĘ	2 —14	40 9
अरिष्ट झात होने पर कर्तव्य	Х	81	3 6 — 4 8	\$ < ?
न्याप्रपुरगमन	¥	8.6	५५−६६	\$<8
प्राप्तप्रल	Я	8.9		Ę C Ę
ब्रह्महत्यादि के पारंठ	¥	ষ্ট	255	828
अज्ञान से बंधन	A	30	29	\$69
देहादि की ट्ट्यता	Y	¥4	₹9—३२	६८९
इच्छा कभी दूहय नहीं	Я	ጸወ	98-92	\$ \$0
जड स्वप्रकास नहीं	x	አ ወ	9.5	E 9 9
जड-चेतन का कस्तविक संबंध नहीं (दी.)	٧	४७	840	इ२२
चेतन की अट्टइयना	γ	8.70	89	ξ Q -
चेतन का नित्य भान	8	አው	8953	६५३
यृत्तिज्ञान हे नित्यभान का मेद	8	80	**	E ~ J
स्वप्रकाशता	x	80	મુ*ધ	۱۹.
बातकनिरास (टी.)	R	80	8.4	q V ÷
<u> हुग्रूप का कर्म से सम्बन्ध नहीं</u>	¥	80	80-49	. 48
प्रम से ही अधिकार व बंधन	R	8.0	44-18	667
कर्मबन्धन से निवृत्ति	R	43	લ ધ	₹ ₹14
पराक्षतिः की स्तुति	У	8.0	હિલ્ દુલ્	६९६
स्तोत्र की फलश्रुति	¥	ጵወ	ঙ(ķ ¢
अहमगीला	४ उत्तर	9-92		६९९
ब्रह्मगीतिः	有	9		s() ()
ब्रह्मपुर का वर्णन	ब्र	9	6-36	19(1)()
ब्रह्म का वर्णन	富	9	39₹8	\$09
देवकृत ब्रह्मस्तोत्र	ब	9	39-92	\$0 R

1				
वेटार्थ-विसार	刺	₩.		A()A
अवाच्य में आस्त्रप्रवृत्ति (हैं)	Ŋ	₹	9	408
सृष्टि के पूर्व केवल दिाव (ऐतरेयक का				
विस्तार.)	Ħ	26.	*	\$ O.8
आत्मशब्दार्थ (थै.)	1	₹	Pc.	0.08
ईसम	增	ą.	4	BOR
सृच्चि		₩.	×	⊌ ⊕ પ
आत्मगृहीति अधिकरण का संक्षेप (टी)	7	2	ጸ	9 € 4
जगत्कारणविषयक मतभेद	g	3	۹ ۹ −۰	© () ધ
जून्य की कारणता कहने का अभिप्राय (हिं <i>.,</i>	룆	₹	۷	ଓଠାରୁ
द्विविष् परमार्थ	Ħ	₹	ð.a	&⊕ @
व्यावहारिक-प्रातिभासिक विमाजन	ब्र	ş	98 40	୭୫୧
वेदार्थ	Ħ	ž.	Q 9	80<
मार्गान्तर प्रातिभातिकवोधक	勇	¥	9 7	\$ () \$
वृष्टियेव से सत्यत्वभेर	Ħ	9	\$4-26	0.0 ₹
मिष्या की सन्योपायता	ज़	₹	₹4-28	@() e
धैदिक के लिये मार्गान्तर हेय	ब्र	. 3	3 ()	5118
पासण्डी	Ħ	*	34-44	B.() s
साक्षी ज़िवं का स्वरूप	ब्र	ą		399
ऐतरेवकार्थनिरूपण	Ħ	1	3-10	699
क्रियदाक्ति व चिच्छक्तिरूप से प्रवेश (टी)	झ	ą	9	393
स्वतःभान साक्ष्य का नहीं	' R.	¥	2	992
द्धन्य भाव मानने वाले पक्ष की समीक्षा	콯	ą	∌ − ₹ ()	©9 +
भान नित्य	11.	₹	9.9	093
भान साक्षिरूप है	¥	ą	93	৩৭ ঃ
बरोक्षस्मल में विधय-ज्ञानसम्बन्ध (हिं.)	Ħ.	9	96	898
अनुगत चित्राकाश साक्षी है (दी.)	翼.	3	96	314
निक्वय-निर्धारण (हिं.)	Ħ.	2	98	094
संज्ञान-निरूपण (हिं-)	M.	Ę	9.0	७१६
Made a a south a first to				

स्पृति, मति, मुकि, प्रका (टी.)	7 1.	-		[37
क्रिय सदस्या	W.	1	29	6.9 €
प्रशा है। प्रतिष्टा है	W.	3	ર બ	693
'बचार्न ब्रह्म' का स्पव्दार्थ (टी)		*	27	996
साम से मोक	ह व	ą	२८	199€
तेति रीयोपनिषद्विवरण	別. _	Ą	79	466
च्यात्येय भुतिसंब्रह (दी.)	₩. _	ą	₹9 — 99८	999
स्थरूपलक्षमा का साधन (दी.)	W.	₹	₹9	999
मुझामन्दार्थ (टी.)	7 1-	₹	43	७१९
महातान को फेल	湖.	ą	3 .9	850
	n.	Ę	₹ 7 — ₹ ₹	880
'सह' और 'विपदिसता' का अभिप्राय (टी)	Ñ.	₹	3.5	950
प्रसा से सुविद	声-	2	á.s.	9 29
अज्ञातात्या से अतिरिक्त अज्ञान नहीं (हिं)	司.	4	₹ &	859
अभिन्ननिसित्तोषादान (टी)	ब्र	Ę	3 €	७२५
यिवर्तवाद (टी.)	別.	4	着後	659
इंग्डर से ही वायु आ दि की जन्मति (टी.	ब्र-	\$	3 4	5
प्रजापतिकर्तृक भौतिक सर्ग (टी)	Ŋ.	3	₹ %	
झरीरत्रय, पंचकोश टी)	n.	\$	3 €	J
कोप्रविधार का प्रयोजन (हिं.)	Ŋ.	₹	3 €	r
मनोमय	列	ą	8 ()	248
कोशों का भीतरीयन (हिं.)	W.	ą	8.0	
भानन्धमय	П.	₹	8.5	9 -
आरंन्यभव सर्वान्तर है या मही – इसकी व	रीका			
(截.)	w.	\$	8.4	547
बाग्र केल की आंतर को श ते पूर्णता (हिं.) π.	4	€ 1	3 4 €
कोशोपन्यास उपासनार्य नहीं (टी)	Ŋ.	3	3.8	9 ≈ €
रसवाक्य क्यों ? (ही.)	W.	3	\$4£	94.5
रस्यव्यवस्थ	M.	4	80	353
आमंबसप आकाक्ष	-	4	W.C.	979

भय य अभय का हेतु ब्रह्म	ब्र.	3	ù (}~= \{ }	જ ર ૮
परम् यद	Ħ	3	ષય	७२८
मननहीन को इहा से भय	莱	3	ելել	७२८
अभेद से अभय (हिं)	Ħ	3	ելել	326
आनन्दमीमांसा	W.	ą	Eq.19	७२९
जीव-ईझ्यर का अभेद	ब्र.	ą	48	ख३९
विधेकपूर्वक साक्षिबोध	ਜ.	*	\$ 0	φ ξ ()
च पसंक्रमण	爾.	ą	६२—६३	ত হ 😗
शन्य की अप्रवृत्ति	ज	4	६४	@\$ ()
विधि में लक्षणा कैसे ? (टी)	ã.	3	E, le	031
ब्रह्मचिंतन का उपधादन (टी)	翼.	3	ĘØ	८३ १
ज्ञा नी की ताप नहीं	Ñ	3	Ęζ	@45
मुक्त का अनुभव	虱	4	६१-१0५	उइ२
उक्त अनुभवयश सचिशेषता नहीं	ब्र.	₹	908-900	931
ईइवरगीति का निर्देश	ब्र.	₹	909-999	ゆうえ
गीतमाहात्य	霄.	3	999-990	ওয়ুদ
तलबकारोपनिषत् (केनोपनिषत्) का स्थास्यान	到.	Я		৩২৪
स्वतःसिद्धं देव हैं	舞.	8	9	\$ F C
घही मन आदि का प्रेरक है	ब्र.	Х	₹	18 3 2
इन्द्रियों और उनका प्रेरक (हिं)	刺	ጸ	ą	ও ३ ট্
भन आदि जात्मा में कल्पित	ब्र.	ď	U _t	Ø\$0
श्रोजादि का सामर्थ्यप्रदाता	Ħ	٧	Ę	7230
म्नका मन	Ā	¥	vo	ଓଞ୍ଚ
इंद्रियों का ध मन का अविषय	ਕ	४	9.0	936
बिवित-अविदित से अन्य	₮.	g	99	260
आत्मा ही ब्रह्म	M .	8	99-93	936
धीर	ब्र.	8	98	७३९

अधिकयस्त्र से जात	_			1 39
'अविक्य' कर भी अविक्य (हिं.)	T	*	91,	33 ×
#काञ-अन्यमिकार से यत	頭	ጸ	9 Ę	\$ 3
कर्तृतया भान गलत	¥	ጸ	3.4	SXI
	頭	Я	3 6	5.64
विद्या का ब्रह्म से सम्बन्ध नहीं (टी)	曹	Ŗ	₹ ξ	58
प्रत्यगाल्या में अविद्या नहीं	薄	A	9-3-3()	96-
प्रकाशदेत	副	¥	₹ ३	ও % _ক
मीन ही संगत	R	A	2.3	387
मानी के रिए कियादि महीं	黄	8	a 4	.82
जीवित रहते ही ज्ञान पा छैना साहिये	H	8	*8-8 <	58.
विद्याफल	Ħ	¥	8.6	48.
स्थेनवत् बद्ध-मुक्तव्ययस्या	Ħ	В	80	5 × ,
विश्वसमृति की उपपत्ति (हि.)	Ħ	8	84	3 - 5
एक आत्मा बद्ध और मुक्त केले (टी)	ब्र	8	84-86	5 «
यायतारका अनुभूतियाँ	莱	¥	40-48	ي د
महमातिरिक्तका दर्शन नहीं	¥	8	५५—५६	886
विदान् की तदा तमावि	頭	¥	42	286
अभेद भी आध्या सिक	W	Å	E 9	286
विध्य से अतिरिक्त माया नहीं	न	St.	Ęį	284
सब प्रमाणी की परम निका	*	R	£'∞-'ø'()	જપ()
इतन किय को ही	莱	¥	109	94()
शियकृषा से हैं। ज्ञान		8	03- 64	249
यशक या	Ħ	¥	45	૭ ૧૨
गुरु के आलोकम से सम्प्रसाद	Ħ	¥	998	64 £
प्रस्तव के हिन	T	¥	129-92*	1948
परमाडैलियकानी की प्रशंसा	T	¥	124-126	
विद्याप्रतिबन्धक	=	¥	980-949	७५९
ज्ञाननिष्ठा होने का विधान				
नगराम प्रत्य है। ये इस क्षित्रीय	Ħ	¥	942	७५९

40 1				
अदिञ्कपन (छान्दोग्य परः य सप्तम का				
र्संग्रह)	Ħ	ų		9 £ ()
आदेश का वैशिष्ट्य	Ħ	ų	ą	25.3
कार्य की कारण से अनन्यता	ब	L ę	≨ −8	७६ १
कार्य-कारण का भेद अंसगत	Ħ	4	44	ଓଷ୍ଟ
घ्यंग कार्य नहीं	ब	ų	9 %	96,3
कार्य सदसदात्मक नहीं	東	Cq.	9 8	७६ ५
भ्रमसिद्ध भेद	*	Cit	39-93	अ६्५
विकार वाचारंभण	Ħ	G	7-ই	७६५
कार्य के दों रूप (टी.)	ब्र	4	4.8	७६६
कारणविज्ञान से सर्वविकारन	ब	4	3 4	এছৰ
भेटनिराकरण	a	4	55	উ দু ও
अभिन्न-निमित्तोपादान	Ħ	¢ _q	₹9-३२	ଓଞ୍ଜ
मस्या नहीं मायी कारण (हिं.)	#	9	3 %	930
असत्कारमनिरास	Ħ	ч	\$ 0-8 4	७६९
अभावकारणता और प्रतिश्रंधकाभावकारणता व	ন			
स्रण्डन (हिं.)	#	4	\$4 80	094)
सृष्टि	a	ч	40	20+
गुजोबसंहार (टी)	Ħ	ч	84	\$94
पंचीकरण	म	4	4()-48	808
नाम-स्पन्धाकरण	夏	ч	યદ્	338
कारण-अव्यक्तिरेक का उपपादन	त	ų.	46	53*
अनादि प्रम_	Ħ	طو	티	अज्ह
त्तत्यवस्तु का ज्ञान भ्रम के लिये अनासक्यक	-			
(fig)	Ħ	ય	₹, 8*	१३६
इयेतकेतुविवा	Ħ	4	-9 ધ	351
महावाक्याविवरण (हिं)	Ā	lą.	194	996
स्यम् व अहम् झन्दों का अर्थ	1	tų	७६	900
्र लक्ष्या र्थ	#	4	-	ማረ ()
दाच्यों की एकता अनिष्ट	Ħ	ų	18 €	3029

	_			[41
स्यप्रकाशतासमर्थन	赘	еį	۷2	병신명
	育	B	51	42.4
ज्ञान यह वार्त भी व्यर्थ	Ħ	٩	۷۵	७८३
श्रुति 🖣 अन्यार्थवर्णन तात्पर्वतः २ही	¥	eq.	900-90E	360
अनुसंधान का प्रकार	Ħ	9į	903	464
भायना की अपेक्षा नहीं	有	Ġ _Ę	923	59 9
तत्त्वभतिपर्यायों का संब्रह (टी)	朝	bį	9२६	39 √
ईव्यरोपदेश (भू पविद्या)	ज	٩	98 ६— 9७६	500
आत्मेतरविवादीयर्था	7	bq.	969-990	66.9
मेद में अल्पता	R	16	999	6(1-
मूमा तुल	實	4g	582	603
रह रोपासनाः	30	ę,		×03
ब्रह्मपुर में आकाश (हि.)	育	Ę	9	€(13
आत्मा में स्वाभाविक संकोच नहीं	豖	Ę	₹	د (ع
साक्षी को ज्ञात व अज्ञात रूप से सब क	Γ			
419	 3f	9	খ	604
बाह्यप्रकास की अन्तराकास में समानता	ब्र	Ė	ę	Z) Ę
अपततपाप्तत्याचि	Ħ	Ę	90-49	608
पुष्पप्राप्य फल शरीक्यु	ब्र	Ę	9 4	40.9
सौयुप्त ब्रह्मप्राप्ति व्यर्थ क्यों ?	Ħ	Ę	पृथ—५६	21,5
इदयञ्ज्यार्थ	嶭	ξ	9.9	207
ब्रह्मप्रदिन्तप्रकार	裹	Ę	94-99	202
महा सेतु	Ħ	B,	9.9	60
प्रजापति का उपदेश	亷	15	₹4	290
सदारीर की दुःखनिवृत्ति नहीं	র	Ę	२८	430
बाद की कार्यों में अनुमति	ब्र	Ę	\$ 1-10	699
मिन की सर्वोत्कृष्टता	莱	li,	48	698
यस्तु का स्वरूप (मुण्डकोपनिषत्)	Ħ	৩		494
वक्तर तत्व	×	49	.9	499

42] एक धिज्ञान से सर्वविकान	ब्र	_©	4	494
परा व अपरा विद्या	誠	w	3	494
अहेड्य आदि विशेषण	31	ø	€ —७	८१६
भूतयोगि में दृष्टान्त	36	Ø	2-9	299
संसारमिध्यत्व (हिं)	Ħ	i9	6	259
अगुदुत्पनिक्रम	Ħ	ৢ	9.0	/9 19
.त्रि विध, द्विविध व एक सत्ता (हिं. _/	Ħ	-B	9 2	294
हान से ही मोक्ष, कर्म से नहीं	M	s	93-29	292
जीवों का शिव से अब्यतिरेक	ब्र	·S	3.3	440
निरुपाधिस्वरूप	Ħ	19	२४	٤٤0
यिराट् भी क्षित्व से उत्सन्न	Ħ	ভ	₹	८२१
'स्रपोपन्यास' ब्रह्मसूत्र यर विचार, भाष्यसामंजन्य	ī			
(能)	ब्र	७	२६	€₹9
पंचारिन ऊ म्	兩	10	२७	८२२
युरुष ही सब कुछ	頭	G.	३२ ४३	८२३
लक्ष्यवेधन	莱	w.	3 4-30	८२४
अरुणियन्थन	雾	G.	36	65 8
अन्यवारियमोक	굓	v)	8.0	८२५
मनोमय उक्षर	ब्र	19	8.5	244
ज्योतियौ का ज्योति	ब्र	10	**	८२६
क्षाब का अनुभान अन्य करते हैं	看	Ø	¥ξ	738
दो सुपर्ण	拜	19	36	550
व्यधिकरणवमाविखेनप्रतियोगिताक अभाव (हि)	ब्र	Ġ	4 3	262
वीनशोकना	표	Ø	ዛሬ —६()	8+8
मुक्ति	īť	٥	₹9-€3	490
परवसान्य	TF.	٩	£8-43	4 ₹ ()
आत्मरति आदि	W	٩	৩४—এ <i>५</i>	433
विद्या के सहकारी साधन	×	Ø	6.6	435
विद्या के असाधारण हेसु	ज	9	८ ٩	538

				[43
आस्मभेक्त सदा पूजा	育	ø	24	ટ રૂ ધ
प्रयक्त आदि सामन नहीं	鄞	Ø	۷ ۾	234
मुमुक्ता (हि.)	TE	v	25	८३५
सं-वास	Ħ	G	20	438
तपःश्रम का अर्थ <u>(ह</u> ि)	W	ø	60	435
'वेद्यन्तविज्ञानसुनिद्धिवतार्थाः' आदि बास्य	Ħ	ø	٤٩	638
कलाधिलय	W	U	₹0	630
एकीभाव में कृष्टांस	Ŋ	ø	9	252
ब्रह्मज्ञान से अस	Ħ	v	9.3	\$ \$ \$
सस्यमेदनविषि (केयस्योपनिषत्)	再			736
सत्त्व थेदनीय	ৱ	۷	9	648
ऋडा, भक्ति, व्यान, योग (टी.)	弄	٤	4	9 5 3
बोमोपदेश	ब्र	4	Ę	480
क्रदार, इन्द्र आदि एक ही तत्त्व हैं	虿	۷	98-94	689
ब्रानातिरिक्त योक्षमार्ग नहीं	Ħ	٤	9 &	८४२
अ वस्था त्र य	育	۷	२० २३	5 & 3
दुःस आगस को, हीला (हिं.)	Ñ	۷	२५	< 2, 3
क्षिव निर्दुः स	異	٤	٠, ٤	588
चिञ्च, तैजस, प्राञ्च	র	4	২ গ	484
जीव-ईस्वर-एकस्व	न	۷	ą 4	८४६
'तत्त्वमसि' का बोधकम (हिं)	ब	ć	86.8	185
माया, अविद्या	Ħ	٤	8.5	686
'यह तू, तू वह' का अर्थ	Ħ	۷	ጻን	686
जीयन्मुक्त का अनुसंधान	ब्र	6	ጽ <i>ፅ</i>	686
त्रिव चिञ्चेष चिन्तनीय	有	۷	48	44()
बृहरारण्यकोपनिषञ्ज्यास्याः (मैन्नेयी ब्राह्मण)	有	9		24(1
आर्नेद परप्रेमात्यव	¥	٩	9	८५ ।)
स्काकाक्ष आनंद (हिं)	ब	9	9	۵٩ ()

443				
44] सब अपने लिए प्रिक	귫	٩	२− 9३	249
ौश्रवणादि विधेय, उनका स्वरूप (हिं)	ਤ ਭ	ę	9 ધ	648
अवण अंगी (दी)	T T	9	94	243
ज्ञान से दु खनिवृत्ति व परमानंदप्राप्ति	ਜ਼ ਜ਼	٩	95~90	648
भेववर्जन से हानि	剪	٩	96	448
अन्यवृद्धिः संसारहेतु है	র	R	22	244
ू संसार-उच्छेद	剪	9	23	८५५
अन्य शास्त्रों का परस्पर सामंजस्य नहीं	虿	8	२५-२८	646
अवैन प्रशंसा	ब्र	٩	վ Կ ←Ծ Կ	6410
भेदाभेदनिगस	ø	9	४६	249
वैतवादनिसस	झ	9	8.8	648
हानी दुर्लम	Ħ	ς.	88	644
अवाच्य निष्टा	ब्र	ę	^દ ્દ	259
बृहदारण्यव्याख्यान (तृतीय व चतुर्थ अध्याय				
का सार)	Ą	90		८६१
उषस्तब्राह्मण का संग्रह	귤	9.0	9-19	८६
आत्ममंनिधि से सकल चेष्टा	7	90	2	८६२
अहमर्थ	翼	90	¥	८६२
गीण व मिथ्या का भेद (हिं)	Ŋ	9.0	У	E 3 S
हृष्टिका द्रष्या	Ŋ	90	Ę	483
भित्य घ अनित्य दृष्टि (हिं.)	M	9 0	ξ	८६३
बृत्ति, आकार, प्रकार (हिं)	g	90	ξ	4 3 2
गार्गीश्राहाण का संग्रह	ġ	9 ()	۷−۶ و	८६५
ओत-प्रोत का अभिप्राय (हिं.)	勇	9.0	4	4
साक्षी किमी में स्थित नहीं	ğ	90	96	643
अन्तर्यामी ब्राह्मण	虿	90	₹0-₹₹	८६७
लोकनियन्तृता (हिं.)	ਭ	90	₹0	८६८
नियम्य-नियामक भेद से अडेतक्षनि नहीं (हिं.)	Ħ	9 0	9 ()	८६८
अदृष्ट द्रष्टा	न	90	₹\$	८६९
3				

				[45
ञ्चातिब्रोहाण	g	9 ()	5-0-15	<00
अनन्यत्य	स	9 O	ą. 9	\$00
च्योतिक्रांहाण का संशिप्त प्रतिपाद (टी)	赛	90	રહ	<00
इक्ताज्ञातस्य से सानी की सर्वतता	育	9.0	3.0	2199
क्रष्टा की अनइयर दृष्टि	Ħ	9 ()	3.4	663
परा संपत्, परा मति	1	90	\$ 3	৫৩২
ज्ञानी को इंग्सेंग् में आत्मबुद्धि नहीं	耳	90	± 8	2.93
'नेह नानास्ति'	Ħ	9 ()	રૂ બ	৫৬৭
एकका उर्जन	有	90	\$0	₹ 2/ \$
शास्त्र से जानकर साक्षात्कार करना ,'विज्ञाय				
प्रज्ञां कुर्वीत')	Ŗ	90	3.4	८७३
महान् अज अहत्या	র	9.0	3 &	603
निरंकुञ ईशरनता	ब्र	90	80	₹ \$ ₹
सेंकुता का अभिन्नाय (दी.)	育	90	9.0	4 \$ 8
विविदिसु	ब	9 ()	83	252
निषेधमुख से प्रतिपादन	я	90	ΧЯ	د ت3 ح
ब्रह्मवेत्ता की नित्य महिमा	Ŗ	90	४६	4.55
शम, दम आदि	Ħ	90	ጸ १	. 5 .
विद्वान् का कर्मों से संबंध नहीं	a	90	4 ()	2%
नुरु के लिए सर्वस्य प्रदेव	Ħ	90	44	₹35
गुरुद्रोह का निषेय	3	9 ()	4.3	.52
कठवल्ली और उचेताउचतरोपनिषद् की व्याख्या	a	99		405
कठोपनिषत् का संग्रह	頭	99	9-46	699
गुहानिःहित गृद तत्त्व	ब्र	99	9	∠ S 9
अलुमानिकाधिकरण का संग्रह (हिं.)	ij	99	9	603
परतत्त्व धर्मादि से परे	¥	99	4	.641
सर्ववेदप्रतिपाव	ब्र	99	4	660
असर हरू	Ħ	99	8	420
श्रेष्ठ आलंबर	ब	99	4	669

-				
ज्ञातव्य का स्वरूष	Ħ	3 9	Ę-C	269
'मदन <u>्य'</u> नहीं जान सकता	¥	99	\$	163
शरीरों में अक्सरीर	頭	99	90	663
ब्रह्मज्ञान के लिए प्रयास नहीं (हिं.)	ब्र	99	99	663
दुराचा स्त्याय अध्यक्षयक	द्व	99	9 २	\$ 2 3
शरीरधारी और झंकर	Ħ	99	98	258
गुहाधिकरण का विस्तृत निरूपण (हिं)	剪	99	98	224
रथतंत्रक	Ħ	7 7	9%	663
परभक्द	3	99	3 %	666
इंद्रियादि सें पुरुष की परता	¥	99	२५–२६	833
पुरुषनिरुक्ति	3)	99	5/2	۷۶۵
श्वभागाय	ब्र	99	১৭	८९ ()
अशब्दादि स्वरूप	म	99	0.6	८९१
पराङ्मुस इंदियाँ	큣	99	39	८९१
अधिगमोपय	ब	9 9	3 3	८९२
साक्षी	ब्र	99	18	693
भेददर्शन मृत्युहेतु	ब्र	99	₹ છ	683
मेरोपलब्धि का उपमादन	ब्र	9 9	\$ €	८९४
नित्यों का नित्य	菌	9 9	8.5	८९६
प्रमाण के विना सिद्धि (हि.)	7	9.9	8.8	८९६
सूर्यादि शिव को विवय नहीं करते	剪	99	ጸጸ	698
सनातन अञ्चत्प	Ħ	99	४ ५	692
महाभयहेतु	Ā	99	8.0	688
इसीर रहते मोक्ष पा लेवे	ब्र	99	88	292
विवेक	ब्रं	99	4 8	698
मनीखा और मनन की साधनता	ğī.	99	ધ્ર ધ્	900
३बे ताइबतरोपनिषदर्थिस्तर	B	99	<u> ५७–७१</u>	₹0 ≎
प्रकृति अश्रीत, व्येताव्यत्तर में माया (हिं.)	耳	7 9	49	९(१

				[47
व्रह्म के विविध रूप	ब्र	99	42	603
ब्रह्मचक्र (संसारचक्र)	ब्र	99	e _l e	१०३
भीय-ईइवर का अमेद	ब्र	99	§ 0	€09
शर अवहर	ब्र	99	६१	808
शा नफल	可	79	6 3	የ (} ሄ
भोक्ता, भोष्य, बेरिला	झ	99	ąą.	408
प्रणच से प्रसाबोध	ज	99	ÉA	904
सत्यादि साधन	富	99	ξĘ	१0६
दूध में थी की तरह आत्मा सर्वव्यापक	Ħ	99	६७	९0६
जपनिषस् श्रब्दार्थ (टी.,	車	9 9	Ęø	905
शान से ही मोक्ष	ब्र	99	Ę۷	९0७
अत्याश्रभ	ब्र	99	9 0	208
देव व गुरु में भक्ति अनिवार्य	ब्र	99	৩৭	٥0٤
शिव अहम्प्रत्ययाश्रय	ब्र	9 2		202
प्रत्यग्बहाभेद	Ŋ	9.2	₹	909
मुमुक्त, शमादि	ब्र	9 9	Я	909
परा विषा से अविद्याविलय	ब्र	9 २	19-6	909
उपलक्षणनिक्षपण (हिं.)	ब्र	9 7	·\$	909
भाव और अभाव दोनों नहीं बनते	Ħ	99	8	890
अविद्यानियृत्ति अतास्थिक	Ħ	9 4	90	99
इसन-अज्ञान	য়	9 7	9.3	399
चपकारक अज्ञान	म	9 9	98	899
सत्यत्व के अभ्युपगम से साधनोपदेश	র	9 4	9 4	649
संसार का प्रवर्तक व निवर्तक	a	97	9 6	१५९
चित्तपाकानुसार उपदेश	Ħ	9.9	950-99	835
निर्याणनिष्ठ परयोगी	룟	9.5	₹0->₹	6 9 5
गुरुसेवा	Ħ	9 २	\$ Q-\$ @	९९३
णुरु कोन ? -	Ħ	9 3	8888	648

साम्प्रदायकिता-प्रतिज्ञा	Я	9 -2	8 ር	९ ๆ ह
अनिङ्चय से मूर्धापात	ब्र	9 २	bį 및	୧ ୨૭
र्शकर-नृत्य	র	9.5	Ę 9	996
ब्रह्मगीता की फलश्रुति	ब्र	9.3	ĘĹ	९१९
पाटनाधिकारी	র	9 4	9 0	999
सूतगीला	₹	9 4		९२१
सूरागीति	बू	9		653
मुनिकृत सूतस्तथ	₹.	7	8 99	9 2 9
संसार हेय (हैं)	सू	9	ψ	९२२
आत्मा सें सृष्टि	₹,	₹		650
स्वतःसिद्ध कर्ता	सु	2	4	650
आत्मा सच्चिदानन्द (हिं्)	₹	₹	4	650
गञ	₹	4	3	₹ २ ८
पञ्च, ज्ञिब	₹.	₹	tę.	635
संसारबीज	复	7	(S)	888
जीवमेद, परमात्मभेद	₹	2	۶—۵	858
कारण, इस्ता, अर्ल्यामी, ताशी (हिं.)	सू	ż	9	999
जीवेहबर विभाग	सू	3	90	456
जीयभेद में हेतु	सू	7	9 3	6.9.0
परमेक्बरभेद में हेतु	सू	7	98	0 9
सदादि की उच्चायचता	₹	5	94	930
सद्र की साच्यिकता	सू	ą	F) v(6.5 ()
विष्णु तामस	₹ <u>.</u>	ą	9 %	e 3 d
त्रिमूर्ति का पग्तत्त्व से अभेद	₹	₹	₹0-₹9	0 13
रु द्रोत्कर्ष	₹	Ŷ	₹₹₹9	è ∄ ∻
सद्रपूजा उत्तम-साथम	₹	4	રૂ ર	4 5 3
गलत निहस्य से संसरण	<u>य</u>	\$	Į 4 축 Eq	ΕĘγ
रुद्र सान्त्रिक	सू	۵	A.f.	०३४

शिवज्ञान मुक्तिसाधन				[49
	सू	9	2.8	934
हरि, ब्रह्मा आदि ईश्यर ही हैं, जीव नहीं	सू	7	49	935
पौराणिक लीलाओं का सामंजस्य	A	2	44-48	835
अद्भेत का गलत प्रयोग	東	्व	E 3	939
ऐक्य और असमानता की उपपत्ति (हिं.)	सू	2	\$ \$	SES OF
पौराणिक आदि वाक्यों का समन्वय	Æ	2	93-03	936
सब कुछ शिय है	有	2	Ee	939
सामान्य सृष्टि	A	3		989
शिव से सुष्टि का आविशाव	सू	ą	9	889
अदितीय निर्मल क्षिय कारण	सू	ą	9	989
अजाति और अध्यारोप (हिं.)	Ą	3	X	683
तर्क अस्वतन्त्र	सू	3	Ę	485
वेदश्रमाण्य-नैयायिक, मीमांसक और वेदान्तिओं				
मत से (हिं.)	₹	3	G	685
अनादिश्रुति प्रमाण	सू	3	4	683
स्वतः या परतः दोष असंभव	₹	3	9-94	683
स्यतः प्रामाण्य (हिं)	₹.	3	9 &	688
आप्तत्ययरीक्षा (हिं.)	₹.	2	9.19	१४५
शिव की आफ्तता	सू	3	94	8 % 5
वस्तुतः वेद अनादि	सू	3	29	688
शास्त्रीय अर्थ में तर्कमूलक प्रश्नों का अवसर				, ,
नहीं (हिं.)	4	3	3.5	980
शिवस्वरूप में श्रुति ही प्रमाण	#	₹	20	289
विवर्ताश्रयण	सू	3	3.5	686
माया	₹.	3	30	626
बेद ही निर्धिरुद्ध प्रमाण	₹ _	3	3.5	940
शिवेद्व चेद	सू	3	34	949
येद के बिना शिव प्रमाण नहीं	स्	3	80	849
	E)	1		1
शिवमक्त स्वतंत्र	सू	70	80	947

₹.	2	43	943
₹.	ē	48	643
सू	-3	419-69	848
₹	ą	EX	944
₹	×		१५६
सू	8	9	309
Ħ.	*	9	१५६
₹	x	5	१५६
₹.	8	ų	940
₹₹	8	Ę	846
सू	8	90	846
ह नहीं (हि.) सू	8	90	846
सू	A	99	946
<u>A</u>	8	9 6	949
₹.	8	913	849
₹.	R	2.3	९६0
₹.	8	34	969
T.	*	3 3	943
सू	A	23	983
दर्जन से मोक्ष सू	*	10-20	888
A	R	89	888
£.	¥	8.5	828
₹.	8	83	888
सू	8	88-84	968
सू	R	86	984
₹.	4		988
सू	Eq.	3	१६६
	eq	0-4	१६७
	東京東京東京東京東京東京東京東京東京東京東京 (Fř.)	現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現 現	मू प्र

				[51	
झरीर डिबिध बुद्धिका विषय	स्	q	9	950	
बुद्धि जड है	सू	q	9.8	886	
अत्या ही अहमर्थ	¥	4	94	959	
स्यप्रकाशतासाधन	Ħ.	4	98	9 5 9	
यृत्ति का चिनियोग	सू	4	3.0	989	
चैतन्य ही भासक	सू	Le	29	990	
भ्रम से कर्तृत्वादि	#	eq	24	990	
'गौः' ज्ञान का विषय है गोत्य	सू	bq	26	969	
अहंबुद्धि मिल्लिययक नहीं	Ã	4	98	909	
अहंशव्द की भिन्नार्थता की उपपत्ति	सू	eq	₹0	963	
आकृति ते अब्द का संबंध, व्यक्ति से नहीं	सू	Ú,	39-39	909	
चिदात्सा है। अहंशब्दार्थ	₹.	Le.	34-36	603	
अहंकार अहंशब्द का गौण अर्थ	सू	eq	₹ 9	603	
आत्मस्यरूप	A	4	89-85	608	
साक्षी ब्रह्म	सू	4	84	608	
याक्यार्थ	सू	4	88	ए छ ५	
ज्ञाननिष्ठा में क्रम	स्	4	40	204	
साधनसंक्षेप	सू	Eq.	69	200	
सर्वज्ञास्त्रार्थसंग्रह	सू	६		909	
सामाद् भी आत्मा दुर्दर्श	सू	Ę	7-4	9608	
सच्चिदानंद साम्बमूर्ति	सू	Ę	9.9	969	
अवतार भी ईश्वर, न कि जीव	सू	Ę	98	969	
जीवेइचरभेदनिरास	T.	E _c	94	९८ १	
विष्णु आदि जपास्य	सू	Ę	98	853	
परतत्त्व द्रायान्येन भ्येय	सू	É	₹ ₹	927	
कार्यदेवता अप्रधानतया ध्येय	Ą	E	58-10	963	
सब छोड़कर एक दिया ही ध्येय	Ą	Ę	₹9	€28	
आवर्षण दुम	₹		23-24	858	

•				
रहस्यविचार	₹.	19		964
ध्यानादि साथनविधि	सू	G	2-23	864
हानियों में वेयतायस्थान	Ą	O	58	366
साधकों में देवतावस्थान	स्	U	3.4	929
तांत्रिकों में देवतावस्थान	₹.	9	7 5	929
लौकिकों में देवतायस्थान	सू	19	510	929
किसी का अवमान न करे	सू	19	29 -	888
अप्रियभाषण न ,करे	₹	10	39	929
हिंसा न करे	E.	O	33	968
अंकन न करे	₹.	S	₹₹	929
सर्ववेदान्तसंग्रह	A	۵		990
शिय की असाधारण मूर्ति	- A	4	5	980
परतत्त्व की विभूतियाँ	Ä	2	8	990
सद्विलक्षण माया	सू	6	4	999
ज्ञान से ही मोश	स्	٤	Ę	999
बास्तविक ग्रमा (हिं.)	सू	۷	B	883
यज्ञादि विविदिषाहेतु	A	۷	. 4	885
ज्ञान के अंग	सू	4	99	663
क्क्रव्य की समाप्ति	सू	۷	4.3	668
अधिकारिभेद से शास्त्रभेद	सू	6	36	994
वैदिक के तुल्य कोई नहीं	सू	4	40-69	299
बासकथन	सू	4	₹ 10	9000
सूतगीता की फलश्रुति	सू	6	196-69	9009
यझवैभवसण्ड की फलश्रुति	A	4	63-63	1003
चूतसंहिता की महत्ता	सू	6	28-64	9003
सूतसोहिता की फलश्रुति	#	6	68-60	3008
ब्रन्थान्त में मंगल	Ä	6	66-69	1001
10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-1				